परिवर्तन विजेताओं (चैंपियन) का इतिहास

मार्च 2020

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय
भारत सरकार

परिवर्तन विजेताओं (चैंपियन) का इतिहास

बेटी मेरा
अभिमान है
पूरे देश की
शान है

स्मृति ज़ूबिन इरानी
Smriti Zubin Irani

सत्यमेव जयते

मंत्री
महिला एवं बाल विकास और वस्त्र
भारत सरकार
नई दिल्ली
Minister
Women & Child Development and Textiles
Government of India
New Delhi

MESSAGE

Beti Bachao Beti Padhao (BBBP) programme was launched on January 22, 2015 by Hon'ble Prime Minister to celebrate the Girl Child and enable her education. BBBP aims to bring an attitudinal shift in the Country; with the aim to arrest declining Child Sex Ratio (CSR). Under the Scheme, multi-sectoral interventions are made in gender critical districts and advocacy and media campaign is conducted on PAN India basis.

The Scheme has stirred up collective consciousness towards changing the mindset of the public to acknowledge the rights of the girl child. The scheme has resulted in increased awareness and sensitization of the masses. It has raised concerns around the issue of declining CSR in India. As a result of collective efforts of the stakeholders supporting the campaign, BBBP has found its place in public discourse.

I take this opportunity to commend the enthusiasm demonstrated by all the stakeholders across country to make BBBP a 'Jan Andolan'. The duty bearers at the district level have made conscious efforts to intertwine the message of BBBP with cultural and social traditions of the local community. Such initiatives help in positively impacting the community to make it more understanding of the issues affecting the girl child and work towards insuring their rights. I take this initiative as a beginning of an era where the girls are equally celebrated. This compendium is a collection of such valuable stories and initiatives which can be used for cross learning & inspiring all of us to take the movement further.

(Smriti Zubin Irani)

Ministry of Women & Child Development : Room No. 353, 'A' Wing, Shastri Bhawan, Dr. Rajendra Prasad Road, New Delhi-110 011, Phone : 23074052-54, Fax: 23387384
Ministry of Textiles : Room No. 129, 'D' Wing, Udyog Bhawan, New Delhi-110011, Phone : 23061385, 23063779, Fax : 23061575

देबश्री चौधुरी
DEBASREE CHAUDHURI

राज्य मंत्री
महिला एवं बाल विकास मंत्रालय
भारत सरकार
नई दिल्ली-110001
MINISTER OF STATE
MINISTRY OF WOMEN & CHILD DEVELOPMENT
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI-110001

MESSAGE

The Beti Bachao Beti Padhao Scheme has been successful in establishing the issue of rights of Girl child as a national agenda. It has resulted in increased awareness, sensitization and conscience building around the issue of declining CSR in the public domain. However, there is still a long way to go before it achieves its all-embracing goal of achieving a gender neutral society.

The District Administrations, are the flag-bearers of the BBBP Scheme as the success of the scheme is impossible without their participation and concerted efforts towards adopting holistic measures aimed at ensuring the survival, protection, education and participation of the girl child.

In the past 5 years and under the effective and able leadership of District Collectors/District Magistrates/Deputy Commissioners, the District Administrations have been successful in implementing the BBBP scheme in their districts by diligently and innovatively interpreting the scheme to accomplish its goals with renewed resolve.

This collection of 25 initiatives taken at the local level, is a chronicle of tireless efforts of grass root workers. These stories are testimonial of the efforts of district administrations and Communities that have initiated change in their districts, by giving the BBBP scheme a new meaning by increasing awareness, sensitizing communities, while accomplishing the larger goal of improving the Child Sex Ratio in their respective districts.

I hope that these initiatives will further inspire all the readers to strengthen their commitment to BBBP and advocate change in their regions by providing girls an equal access to opportunities in all spheres of life.

Debasree Chaudhuri
(Debasree Chaudhuri)

कार्यालय : कमरा नं. 756, 'ए' विंग, शास्त्री भवन, डा. राजेन्द्र प्रसाद रोड, नई दिल्ली–110 001, दूरभाष : 23382361–63, फैक्स : 23357854
Off. : Room No: 756, 'A' Wing, Shastri Bhavan, Dr. Rajendra Prasad Road, New Delhi-110 001, Tel. : 011-23382361-63, Fax. : 011-23357854
E-mail : debasree.chaudhuri@gov.in

प्रस्तावना

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ (बीबीबीपी) योजना की शुरुआत 22 जनवरी 2015 को भारत के प्रधानमंत्री द्वारा प्रयासों का अभिसरण व जागरूकता पैदा कर के बालिका दिवस मनाने, बच्ची के जन्म पर खुशी मनाने और भारत में बाल लिंग अनुपात (सीएसआर) में तेजी से होती गिरावट को दूर करने के लिए की गई थी। यह योजना लड़कियों के साथ जन्म के पूर्व और जन्म के बाद होने वाले भेदभाव को संबोधित करती है। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' योजना तीन महत्वपूर्ण मंत्रालयों, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय और महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, की त्रिमंत्रालीय संयुक्त पहल है। इस योजना के अंतर्गत लोगों की मानसिकता को बदलने, जागरुक करने और बालिकाओं के सर्वांगिण विकास पर ज़िलों में बहुक्षेत्रीय हस्तक्षेपों के साथ–साथ राष्ट्रव्यापी मीडिया, एडवोकेसी और आउटरीच अभियान के माध्यम से लिंग भेदभाव को दूर करना और पीसीपीएनडीटी एक्ट को जमीनी स्तर पर गंभीरता से लागू करने पर ज़ोर दिया जा रहा है। यह योजना जिला स्तर पर सहभागी मंत्रालयों के साथ अभिसरण कार्यवाही, मुख्य हितधारकों के क्षमता निर्माण, जिला कार्य योजना और अभिनव गतिविधियों के माध्यम से स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए योजना के आसान अनुकूलन, फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं के माध्यम से जागरूकता पैदा करने और 'बीबीबीपी' के स्थानीय विजेताओं सहित प्रतिबद्ध प्रमुख हितधारकों को मान्यता देने पर ज़ोर देती है।

'परिवर्तन विजेताओं (चैंपियन) का इतिहास' का संकलन 'बीबीबीपी' के तहत राज्य और जिला स्तरों पर की जा रही कुछ अभिनव पहलों का आलेख करने के लिए किया गया है। यह ज़मीनी स्तर पर अपनाए गए अभिसरण दृष्टिकोण को दर्शाता है, और जिला प्रशासन और फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं द्वारा सामुदायिक जुड़ाव के लिए उठाए गये अनूठे तरीकों पर रोशनी डालता है।

उम्मीद है कि यह पुस्तक सहयोगपूर्ण शिक्षण के लिए एक साधन के रूप में काम करेगी, और सभी हितधारकों को, संदर्भ विशिष्ट प्रारूपों और गतिविधियों को विकसित करके, 'बीबीबीपी' के उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करेगी। मंत्रालय राज्य और जिला प्रशासन, स्कूल और स्वास्थ्य नेटवर्क, अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों, नागरिक समाज, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायकों, और समुदाय सहित सभी हितधारकों द्वारा दिए गये सकारात्मक योगदान को कृतज्ञता से स्वीकार करता है, जो सार्वजनिक संलाप में 'बीबीबीपी' को एक महत्वपूर्ण एजेंडा के रूप में स्थापित करने में अत्यंत उपयोगी रहा है।

विषय-सूची

लक्ष्मी पूजन 2

विद्या वाहिनी 4

नन्हें चिह्न 6

कुआँ पूजन 8

प्रोत्साहन 10

ग्राम पंचायत स्तर पर बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ सप्ताह का समारोह 12

धार्मिक मंचों के माध्यम से संदेशों का प्रसारण 14

बेटी बागीचा 16

भित्ती चित्रण (वॉल पेंटिंग) 18

अव्वल आने वाली लड़कियों और लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने वाले स्कूलों को पुरस्कृत करना 20

धार्मिक नेताओं का संवेदीकरण 21

अबेम्मा–अबुंगो बोर्ड 22

हॉकी प्रदर्शनी मैच 24

अपने उप–आयुक्त और पुलिस अधीक्षक को जानना 26

स्कूल प्रबंधन समितियों के माध्यम से बाल विवाह को रोकना 28

शुचिता – पाँच स 30

स्वागतम नंदिनी 32

बाल विवाह को समाप्त करना 34

केंद्रीय, राज्य और जिला स्तर पर सहभागी विभागों के बीच कल्याणकारी योजनाओं का समन्वय 36

बालिका मंच – कन्या सशक्तिकरण सभा 38

माँ–दिकरी सम्मेलन 40

अपनो बेटी अपनो मान 42

आंगनवाड़ी केंद्रों में हर महीने की 24 तारीख़ को बालिका दिवस का अवलोकन 44

घर की पहचान बेटी के नाम 46

बाल विवाह निषेध रथ (कारवाँ) 48

लक्ष्मी पूजन

जिला दक्षिण–पश्चिमी दिल्ली, दिल्ली

उद्देश्य

धार्मिक कार्य के ज़रिए लड़कियों के महत्व को बढ़ावा देना।

गतिविधि का विवरण

जिला प्रशासन के द्वारा लक्ष्मी पूजन का आयोजन किया जाता है, जिसमें धार्मिक गुरुओं को शामिल कर के 0–1 वर्ष की बच्चियों के लिए एक विशेष हवन समारोह किया जाता है। कुआँ पूजन की ही तरह, जिसे दिल्ली के इस हिस्से में अक्सर बेटे के आगमन पर मनाया जाता है, जिला प्रशासन ने एक ऐसा समारोह प्रारम्भ किया है जो बेटियों के जन्म का स्वागत करता है, और जिसे 'लक्ष्मी पूजन' का नाम दिया गया है। इसको करने का तर्क 0–1 वर्ष के आयु वर्ग की लड़कियों के लिए एक कार्यक्रम की मेजबानी करना है, ख़ासकर उन गाँवों में जहाँ जन्म के समय लिंग अनुपात (एसआरबी) कम है। यह कार्यक्रम उन गाँवों में भी किया जाता है जहाँ जन्म के समय औसत/उच्च लिंग अनुपात है, ताकि लड़कियों का महत्व बना रहे, जिसके फलस्वरूप यह सुनिश्चित किया जा सके कि इस पहल का असर पूरे जिले में महसूस किया जा रहा है। यह कार्यक्रम जिला न्यायाधीश की देखरेख में आयोजित किया जाता है। धार्मिक नेताओं को यह संदेश देने के लिए शामिल किया जाता है कि लड़कियों का जन्म भी खुशी मनाने का एक अवसर है। तकरीबन 100 लड़कियों और उनके माता–पिता को हर अवसर पर प्रशासन द्वारा तोहफे, बर्तन और मिठाइयाँ दी जाती हैं। लड़कियों का आंकड़ा आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा एकत्रित किया जाता है और इस कार्यक्रम के लिए स्थानों का चयन करने के लिए किया जाता है। ये पहल सुनिश्चित करती है कि जागरूकता पैदा करने के लिए प्रमुख भागीदारों, अर्थात् स्कूलों, कॉलेजों, रेजिडेंट्स वेलफेयर एसोसिएशंस, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं आदि के साथ नियमित रूप से जुड़ा रहा जा सके।

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

इस पहल को शुरुआत में ग्रामीण समुदायों को लक्षित करने के लिए चयनित ग्रामीण आंगनवाड़ी केंद्रों में आयोजित किया गया था। इसे 7 जनवरी 2020 को कापसहेड़ा में पायलट किया गया था और फिर उजवा, धुम्मनहेरा और नजफगढ़ में बढ़ाया गया।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

जिला प्रशासन की सक्रिय भूमिका और साथ ही लड़कियों के जन्म का आंकड़ा प्रदान करने के लिए आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की प्रतिबद्धता ने इस गतिविधि को सफल बनाने में मदद की है। बेटियों को स्वीकार करने के बारे में लोगों को संवेदनशील बनाने के लिए एक पारंपरिक, पुत्रों पर केंद्रित धार्मिक प्रथा को फिर से लागू करना, मानसिकता को बदलने में एक उपयोगी रणनीति साबित हुआ है।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

इस तरह के कार्यक्रमों के आयोजन और प्रबंधन में तालमेल लाना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। क्योंकि लड़कियों को सशक्त बनाने के लिए एक पारंपरिक, पुत्रों पर केंद्रित अनुष्ठान को पुनर्गठित किया जा रहा है, इसलिए दृढ़ पितृसत्तात्मक मानसिकता को बदलना चुनौतीपूर्ण है। इसके लिए प्रयास और निरंतर जुड़ाव की आवश्यकता होती है।

जागरुकता बढ़ाने के साधन

पैम्फलेट, स्टिकर, पेन, बैनर, स्टैंडी और सबसे महत्वपूर्ण बात, इस कार्यक्रम के संबंध में आरडब्ल्यूए सदस्यों के साथ तालमेल।

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

कुल मिलाकर 400 लड़कियाँ चार स्थानों पर आयोजित इस कार्यक्रम का हिस्सा रही हैं। इन कार्यक्रमों के दौरान लगभग 700—800 लोगों को जागरूक किया गया, जिनमें से लगभग 150 लोगों ने प्रत्येक कार्यक्रम में भाग लिया।

गुणात्मक परिणाम/मान

बेटियों को अधिक स्वीकृति मिल रही है क्योंकि माता—पिता गर्व महसूस करते हैं कि उनकी बेटियों को पहचान मिल रही है। इसके फलस्वरूप परिवार अपनी बेटियों को शिक्षित करने के लिए प्रेरित हो रहे हैं और पितृसत्तात्मक मानसिकता की वजह से शर्मिंदगी की भावना धीरे—धीरे खत्म हो रही है।।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

इस गतिविधि को बड़े पैमाने पर पूरे जिले में आयोजित किया जाएगा। प्रशासन का उद्देश्य अपने दायरे में अन्य धर्मों को शामिल करना है और ''बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ'' के अंतर्गत ऐसे कदमों को अन्य नियमित गतिविधियों, जैसे कि बेटी जन्मोत्सव और शिशु किट के वितरण, के साथ जोड़ना है। जिला प्रशासन उन माता—पिता को भी सम्मानित करने हेतु ध्यान केंद्रित करना चाहेगा जिनकी दो बेटियाँ हैं।

विद्या वाहिनी

जिला कैथल, हरियाणा

उद्देश्य

छात्राओं को सुरक्षित और रियायती परिवहन सेवाएँ प्रदान करना।

गतिविधि का विवरण

छात्राओं को लक्षित महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों तक पहुँचने हेतु सेवा प्रदान करने का आयोजन किया गया है। वर्तमान में इस परियोजना को एक सीएसआर फंडिंग पार्टनर, इंद्रप्रस्थ गैस लिमिटेड, की सहायता से संचालित किया जा रहा है।

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

पायलट।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

रेड क्रॉस और कॉलेज प्रशासन ने एक मूल्यांकन के द्वारा ऐसी परियोजना की जरुरत जताई थी और जब यह परियोजना लाई गई, तो इसे नागरिकों की बेहद सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

मुख्य चुनौती दीर्घकालिक सीएसआर फंडिंग की कमी है। साथ ही, योजना के तहत संपत्ति निर्माण के लिए कोई प्रावधान नहीं है, इसलिए फंड की कमी के कारण गतिविधि में बाधा आ सकती है।

जागरुकता बढ़ाने के साधन

स्थानीय जागरूकता अभियानों के माध्यम से सूचना, शिक्षा और संचार करना।

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

1,200 से ज्यादा छात्राओं को इस परियोजना का लाभ मिला है और वे सुरक्षित अपने कॉलेज या संस्थान तक का सफ़र तय करती हैं।

गुणात्मक परिणाम/मान

छात्राओं द्वारा सार्वजनिक परिवहन का इस्तेमाल लिंग समानता के दृष्टिकोण से समुदायों को, लड़कियों के लिए अवसरों और शैक्षिक सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए, संवेदनशील बनाने में मददगार साबित हुआ है। हरियाणा के समाज में शिक्षा और सार्वजनिक स्थानों में गतिशीलता तक पहुँच प्रदान करने के सम्बन्ध में पारंपरिक रूढ़ियों को तोड़कर और लैंगिक दलकर, यह परियोजना छात्राओं को सुरक्षित और नियमित परिवहन सेवाएँ प्रदान करके महिलाओं की शिक्षा संबंधी बाधाओं को दूर करने में मददगार साबित हुई है।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/ भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

छात्र परिषदों/समूहों, अभिभावकों, प्राचार्यों और स्थानीय समुदायों के साथ किए गए बेस–लाइन और एंड–लाइन सर्वेक्षण से प्राप्त निष्कर्षों के अनुसार सुझाया गया है कि एक मासिक बस–पास सेवा लंबे समय तक चलने वाला और संभव मॉडल है और इसे जारी रखा जाना चाहिए। इस परियोजना को राज्य स्तर तक जिला–वार या हाल ही में हरियाणा के माननीय मुख्यमंत्री द्वारा शुरू की गई 'छात्रा परिवहन सुरक्षा योजना' के तहत बढ़ाया जा सकता है।

'यह परियोजना छात्राओं को सुरक्षित और नियमित परिवहन सेवाएँ प्रदान करके महिलाओं की शिक्षा संबंधी बाधाओं को दूर करने में मदद कर रही है।'

नन्हें चिह्न

जिला पंचकुला, हरियाणा

उद्देश्य

बच्चियों के जन्म को महत्व देने के लिए स्थानीय आंगनवाड़ी केंद्र (एडब्ल्यूसी) में उनके पैरों के निशान का पंजीकरण करना।

गतिविधि का विवरण

आंगनवाड़ी कार्यकर्ता द्वारा प्रयास रहता है कि बच्चियों को उनके परिवारों द्वारा स्थानीय आंगनवाड़ी केन्द्र लाया जाए। वहां आने पर बच्चियों के पैरों के निशान एक चार्ट पेपर पर लिए जाते हैं और उन्हें माँ और बच्ची के नाम के साथ आंगनवाड़ी केन्द्र की दीवार पर लगाया जाता है। यह गतिविधि बच्चियों के स्व–पंजीकरण का प्रतीक है और यह उनकी शिक्षा और समुदाय में भागीदारी का प्रतीक है। मूलतः यह उनके जन्म को स्वीकार करके समाज में उनके अस्तित्व और भूमिका को पहचान देती है।

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

इस गतिविधि की शुरुआत जून 2019 में पंचकुला जिले की राजीव कॉलोनी में एक आंगनवाड़ी केन्द्र में हुई थी। छह महीने के भीतर ही इसे 200 गांवों के आंगनवाड़ी केन्द्रों में लागू कर दिया गया था।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

यह गतिविधि पूरी तरह से आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के सक्रिय व्यवहार, और माताओं को अपनी बेटी के टीकाकरण और समाज में बेटी की भूमिका के महत्व के बारे में जागरूक करने की प्रेरणा पर निर्भर करती है। यह बच्चियों की उत्तर–जीविता रहने के मुद्दे पर आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की निष्ठा को दर्शाता है, जो 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' के लिए महत्वपूर्ण है।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

बच्चियों को आंगनवाड़ी केन्द्र पर लाने का मुख्य उद्देश्य बच्चियों को टीकाकरण के साथ जोड़ना है। आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि सभी माताएं टीकाकरण के लिए आंगनवाड़ी केन्द्र पर जाएं। उसी दौरान आंगनवाड़ी केन्द्र में उनकी उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए टीकाकरण के पंजीकरण के तौर पर, बच्चियों के पैरों के निशान लिए जाते हैं। यह बच्चियों को महत्व देने का प्रतीक है, जिससे माताओं को खुशी मिलती है।

> **'सभी माताएं टीकाकरण के लिए आंगनवाड़ी केन्द्र पर जाएं। उसी दौरान आंगनवाड़ी केन्द्र में उनकी उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए टीकाकरण के पंजीकरण के तौर पर, बच्चियों के पैरों के निशान लिए जाते हैं। यह बच्चियों को महत्व देने का प्रतीक है, जिससे माताओं को खुशी मिलती है।'**

जागरुकता बढ़ाने के साधन

आंगनवाड़ी कार्यकर्ता घर–घर जाकर परामर्श और सामुदायिक चर्चा के माध्यम से जागरूकता फैलाती हैं।

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

200 गांवों में आंगनवाड़ी केन्द्रों पर 1,128 बच्चियों के पैरों के निशान दर्ज किए गए हैं।

गुणात्मक परिणाम/मान

यह गतिविधि लड़कियों की उत्तर–जीविता और महत्व को बढ़ाकर दोहरा परिणाम प्राप्त कर रही है। सबसे पहले, समुदाय के सदस्य टीकाकरण का महत्व जान पाए हैं और दूसरा, 'नन्हे चिन्ह' के माध्यम से गांवों में माताओं और बच्चियों को मान्यता दी जा रही है। आंगनवाड़ी केन्द्रों में बच्चियों के पैरों के निशान के स्व–पंजीकरण ने उन परिवारों को प्रेरित किया है, जिनकी बेटियाँ हैं। यह एक अच्छी कार्यप्रणाली है क्योंकि इससे लड़कियों का मान बढ़ता है, और माता–पिता (सामान्य रूप से समाज) लड़कियों के प्रति सकारात्मक माहौल और रवैया बनाने के लिए प्रेरित होते हैं। यह एक नियमित गतिविधि बन गई है।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

इस गतिविधि के द्वारा समुदाय में एक सकारात्मक परिवर्तन हुआ है। जिला प्रशासन बच्चियों के पैरों के निशान के साथ–साथ, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को माँ और बच्ची की फोटो खींच कर उसे आंगनवाड़ी केन्द्र की दीवार पर लगाने के लिए भी प्रोत्साहित कर रहा है ताकि माताओं और बच्चियों को और अधिक मान्यता दी जा सके। अब इस मुहिम को पंचकुला जिले के सभी आंगनवाड़ी केन्द्रों में चलाया जा रहा है।

कुआँ पूजन

राज्य स्तरीय पहल, हरियाणा

उद्देश्य

पुत्रों पर केंद्रित रस्मों को बदलना और लैंगिक समानता लाना।

गतिविधि का विवरण

जिन गाँव में लिंग अनुपात कम है, वहाँ जिला प्रशासन द्वारा परिवारों को यह कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इसके लिए आंगनवाड़ी कार्यकर्ता कुछ परिवारों को चुनती है और इस कार्य को करने में उनकी मदद करती है। इसकी शुरुआत नवजात बच्ची की माँ के मायके से होती है जहाँ से बच्ची के लिए उपहार भेजे जाते हैं और रस्म के दिन, बच्ची की माँ पानी का मटका लेकर कुएँ या मंदिर तक जाती है। माँ के साथ–साथ अन्य औरतें बच्ची के पैदा होने की खुशी के गीत गाती चलती हैं। रस्म के अंत में सभी को खाना और मिठाई बाँटी जाती है।

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

इस गतिविधि को राज्य भर में बढ़ाया जा चुका है। शुरुआत में इस गतिविधि को उन चुनिंदा गाँव में किया गया था जहाँ रेड क्रॉस कार्यरत है। कुआँ पूजन के लिए परिवारों को स्थानीय रेड क्रॉस दफ्तर द्वारा आर्थिक मदद दी जाती थी।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

इस रस्म को करने के लिए आंगनवाड़ी कार्यकर्ता द्वारा सही परिवारों का चुनाव बहुत अहम है।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

समुदाय की मानसिकता को बदलना एक बहुत बड़ी चुनौती है क्योंकि मूलतः यह रस्म पुत्रों के लिए की जाती है। खाासतौर पर, गाँव के बुजुर्ग लोगों की विचारधारा को बदलना बहुत मुश्किल है और क्योंकि हमारा समाज पुरुष–प्रधान आदर्शों को मानता है, इसलिए कन्या के पैदा होने पर कुआँ पूजन की रस्म करने के लिए परिवारों को समझाना एक चुनौती बन जाता है। किसी भी कार्य को अपनाने और उसमें भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए समुदाय का एकजुट होना आवश्यक है।

जागरुकता बढ़ाने के साधन

माताओं की सभा, बालिका मंच, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता के दौरे और पंचायत की बैठकों के जरिए जागरूकता फैलाई जा सकती है।

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

पिछले पाँच वर्षों में, 21 जिलों में हर साल 100–150 कुआँ पूजन किये जा चुके हैं।

> "बेटियों को अब बोझ नहीं, बल्कि परिवार के सदस्य के रूप में स्वीकारा जा रहा है।"

गुणात्मक परिणाम/मान

बेटियाँ को अब बोझ नहीं, बल्कि परिवार के सदस्य के रूप में स्वीकारा जा रहा है। उनके जन्म लेने पर अब समुदाय में खुशी मनाई जाती है। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' के तहत, इस क्रिया को सामूहिक तौर पर बिना किसी आर्थिक मदद के किया जा रहा है (जो कि पहले रेड क्रॉस द्वारा दी जाती थी)। अब समुदाय बेटियों को अपना समझ कर इस पहल को जारी रख रहा है। कुछ जगहों पर जिला प्रशासन से आर्थिक मदद ली गयी है, लेकिन लोगों की सोच में काफी बदलाव आया है जिसकी वजह से इस क्रिया को पूरे राज्य में बढ़ावा मिला है।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

इस गतिविधि को पौधारोपण की मुहिम और साथ ही जिन घरों में बेटियाँ है, उन घरों के बाहर उनके नाम की पट्टी लगाने की मुहिम के साथ जोड़ा जा सकता है। कुआँ पूजन के समारोह को अलग–अलग घर में मनाने के बजाए एक साथ कई लड़कियों के लिए बड़े पैमाने पर आयोजित किया जा सकता है। इससे खर्चा भी कम होगा। इस कार्यक्रम को गाँव के स्तर पर करने से बेटियों और उनके माता–पिता को भी ज्यादा स्वीकारा जाएगा।

प्रोत्साहन

जिला हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश

उद्देश्य

लड़कियों को उनके करियर की शुरुआत करने के लिए प्रेरित करना।

गतिविधि का विवरण

'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' योजना के 'बचाओ' और 'पढ़ाओ' पहलुओं पर केंद्रित, हमीरपुर की प्रतिभाशाली छात्राओं को जिला प्रशासन द्वारा करियर संबंधी विकल्पों पर परामर्श दिया जाता है ताकि वे अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए सही कदम उठा सकें। इसके लिए करियर परामर्श की शुरुआत की गई थी, जिसका उद्देश्य हैं – (क) सही करियर के चुनाव में सहायक होगा; (ख) लड़कियों के ड्रॉप–आउट दर को कम करना; और (ग) लड़कियों के प्रयासों को मान्यता देना जिससे और लड़कियाँ एवं समुदाय भी प्रेरित हों।

इस पहल के लिए उन लड़कियों को चुना गया जिन्होंने अपनी परीक्षाओं में 80 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त किए थे। ब्लॉक के आधार पर छात्राओं का चयन किया गया और नमूने के लिए छोटा आंकड़ा रखा गया ताकि ज्यादा छात्राओं पर ध्यान केन्द्रित किया जा सके। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी), हमीरपुर के प्रोफेसरों द्वारा लड़कियों को परामर्श सेवा दी गई, जिसके पश्चात उन्हें उप–आयुक्त द्वारा हस्ताक्षरित प्रशंसा–पत्र भी प्रदान किया गया।

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

इस पहल को छह ब्लॉकों में शुरू किया गया था और इसका नेतृत्व स्वयं उप–आयुक्त के द्वारा किया गया।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

उपायुक्त द्वारा ली गयी व्यक्तिगत दिलचस्पी इस पहल की सफलता का मुख्य कारण रही।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

करियर से संबंधित परामर्श सत्र करने के लिए सरकारी स्कूलों में संसाधनों की कमी के कारण परामर्श सत्रों के आयोजन के लिए स्कूलों के बीच समन्वय और परामर्शदाताओं को लाना चुनौतीपूर्ण रहा।

जागरुकता बढ़ाने के साधन

जागरुकता फैलाने के लिए एनआईटी, हमीरपुर के अध्यापकों और छात्रों के प्रेरक वीडियो और भाषणों का प्रयोग किया गया।

> **'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' योजना के 'बचाओ' और 'पढ़ाओ' पहलुओं पर केंद्रित, हमीरपुर की प्रतिभाशाली छात्राओं को जिला प्रशासन द्वारा करियर संबंधी विकल्पों पर परामर्श दिया जाता है ताकि वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सही कदम उठा सकें।'**

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

चार सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा 10 और 12 में पढ़ने वाली 235 छात्राओं को करियर परामर्श सत्र प्रदान किये गए।

गुणात्मक परिणाम/मान

इस पहल से उन लड़कियों में आत्मविश्वास बढ़ा है, जिनको परामर्श दिया गया था। यह प्रोत्साहन का स्रोत रहा तथा इससे उन्हें अपनी शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने और अपनी पसंद के करियर का चयन करने में मदद मिली।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

'प्रोत्साहन' के दूसरे चरण को आगे बढ़ाया जाएगा, और उसका नाम 'प्रयास' होगा। इसके लिए एनआईटी, हमीरपुर से स्वयंसेवकों की पहचान की जाएगी और उन्हें समूहों में बांटा जाएगा। प्रत्येक समूह को जिले के विभिन्न स्कूलों में भेजा जाएगा। ये समूह 12वीं कक्षा के छात्रों के साथ प्रतियोगी परीक्षाओं के संबंध में बातचीत करेंगे।

ये हैं दसवीं की परीक्षा में 80 प्रतिशत से यादा अंक लेने वाली मेधावी बच्चियां

58 होनहार बेटियां सम्मानित

हमीरपुर ब्लॉक की मेधावी छात्राओं को मिला सम्मान

हमीरपुर, 25 जून (राजीव): बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान के तहत जिला प्रशासन की ओर से डी.सी. डा. रिचा वर्मा ने हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड की दसवीं की परीक्षा में 80 प्रतिशत से ज्यादा अंक लेने वाली मेधावी छात्राओं को सम्मानित किया। सोमवार को हमीरपुर के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल कन्या में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इसमें हमीरपुर ब्लॉक के 23 सीनियर सैकेंडरी स्कूलों की 10वीं की बोर्ड की परीक्षा में 80 प्रतिशत से ज्यादा अंक लेने वाली 58 बेटियों को सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वाली छात्राओं में नैंसी शर्मा, कोमल ठाकुर, रिक्षिता शर्मा, शिवानी, अंकिता शर्मा, प्रिया, अंकिता शर्मा, शिवानी कौशल, ईशा पटियाल, पायल अनुष्का ठाकुर, शालिनी, पारुल शर्मा, मुस्कान शर्मा, ईशा चैधरी, कोमल शर्मा, कविता शर्मा, अंजली, किरण भारद्वाज, निशा कुमारी, मीनाक्षी शर्मा, कीर्ति शर्मा, प्रियंका, शिवानी, रचना कुमारी, सुप्रिया गौतम, रुचिका ठाकुर, महक, रीना कुमारी, अमीषा शर्मा, वांशिता शर्मा, रितिका शर्मा, शम्मी कुमारी, श्रेया रंगड़ा, कनिका शर्मा, नंदिनी ठाकुर, निहारिका

हमीरपुर : डी.सी. हमीरपुर डा. रिचा वर्मा मेधावी छात्रा को सम्मानित करती हुई। साथ हैं अन्य गण्यमान्य लोग। (राजीव)

प्रतिभा कुमारी, पन्वी, शिवानी, भारती, नेहा ठाकुर, काजल, महक शर्मा, सोनम, अंजलि, ईशा, दीक्षित

प्रिया शर्मा और मनीषा शामिल रहीं। इसके साथ ही केंद्रीय विद्यालय के करियर काउंसलिंग विशेषज्ञ

छात्राओं की करियर काउंसलिंग भी की। इस अवसर पर डी.सी. डा. रिचा वर्मा ने कहा कि बेटियों को पढ़ाने के साथ-साथ उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए करियर काउंसलिंग अत्यंत जरूरी है। डी.सी. ने कहा कि बेटियां शिक्षा के क्षेत्र में अव्वल रहती हैं लेकिन अधिकांश बेटियों को समय पर मार्ग दर्शन नहीं मिलने के कारण उनका करियर आगे नहीं बढ़ पाता है। उन्होंने कहा कि हमीरपुर जिला प्रशासन सभी विकास खंडों में मेधावी छात्राओं को सम्मानित करेगा तथा करियर काउंसलिंग कार्यक्रम भी आयोजित करेगा ताकि बेटियों का भविष्य बेहतर हो सके इसके साथ ही समय-समय पर बेटियों के मार्गदर्शन के लिए भी जिला प्रशासन द्वारा प्लान तैयार किया गया है।

डी.सी. डा. रिचा वर्मा ने कहा कि हमीरपुर जिला में कन्या भ्रूण हत्या पर पूर्णतया अंकुश लगाने तथा बेटा-बेटी एक समान का संदेश आम जनमानस तक पहुंचाने के लिए भी अभियान आरंभ किया जाएगा ताकि हमीरपुर जिला में लिंगानुपात में समानता हो सके। इस अवसर पर डी.एस.पी. रेणु वाला ने भी छात्रों का मार्गदर्शन करते हुए उनके बेहतर करियर के लिए टिप्स भी दिए। इस अवसर पर जिला कार्यक्रम अधिकारी तिलक राज आचार्य, स्कूल की प्रधानाचार्य नीना कुमारी सहित छात्राओं के अभिभावक भी

ग्राम पंचायत स्तर पर बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ सप्ताह का समारोह

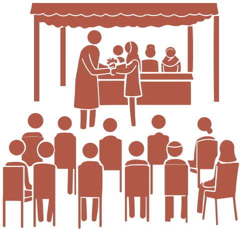

जिला बांदीपोरा, जम्मू और कश्मीर

उद्देश्य

सामुदायिक संघटन के माध्यम से साप्ताहिक कार्यक्रमों के द्वारा ग्राम पंचायत स्तर पर जागरूकता बढ़ाना।

गतिविधि का विवरण

इस कार्यक्रम को एक नवीन प्रयास के तौर पर लोगों के बीच जागरूकता बढ़ाने और सामुदायिक संघटन के माध्यम से लड़कियों की शिक्षा, महिला साक्षरता, लड़कियों के स्कूल न जाना जैसे मुद्दों पर लोगों तक पंहुच बनाने वाली गतिविधियों के साथ जुड़ने के लिए किया गया था। कार्यक्रम में किशोरियों व गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य, स्वच्छता और पोषण पर चर्चा करने के लिए महिला सभा का आयोजन किया गया और साथ ही सामाजिक दृष्टिकोण से बालिकाओं के महत्व पर चर्चा करने के लिए विशेष ग्राम सभाएं भी आयोजित की गईं। जिन लड़कियों ने स्कूल छोड़ दिया था, उन्हें दोबारा दाखिला देने के बारे में भी समुदाय को जागरूक किया गया और लड़कियों की शिक्षा और स्कूल छोड़ चुकी बालिकाओं के उसी समय पर पुनः नामांकन करने पर चर्चा के लिए स्कूल प्रबंधन समिति (एसएमसी) की बैठकों का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की खास विशेषता थी स्कूल शिक्षा विभाग से महिला कर्मचारियों जैसे कि शिक्षिका, प्रधानाध्यापिका, लेक्चरर, आदि में से प्रत्येक पंचायत के लिए बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ की महिला राजदूतों का नामांकन करना।

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

स्केल्ड अप।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

इस अभ्यास की सफलता के पीछे कारकों में जिला विकास आयुक्त द्वारा जिला/ब्लॉक स्तर पर जिला/ब्लॉक स्तर के अधिकारियों के साथ अति सूक्ष्म स्तर की योजना शामिल है। जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों और फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं, जैसे कि आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, आशा और स्कूल के शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी भी बहुत महत्वपूर्ण कारक था। इस कार्यक्रम के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए मीडिया की निरंतर मुहिम भी बहुत सहायक थी।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

इस गतिविधि को लागू करते समय ठंडा मौसम और कानून व व्यवस्था की स्थिति चुनौतीपूर्ण थीं।

जागरुकता बढ़ाने के साधन

जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों जैसे कि जिला विकास आयुक्त, उप प्रभागीय मजिस्ट्रेट, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, जिला कार्यक्रम अधिकारी, सरपंच, पंचायत सदस्य, स्कूल प्रमुख, आदि द्वारा व्याख्यान और संबोधन ने इस कार्यक्रम के बारे में जागरूकता बढ़ाने में मदद की। महिला सभाओं, विशेष ग्राम सभाओं, एसएमसी बैठकों और जिले की हर पंचायत में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

के विषय पर चित्रकारी की प्रतियोगिता के अलावा बैनर, प्ले कार्ड और रैलियों ने भी जागरूकता बढ़ाने में योगदान दिया।

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

नवजात लड़कियों की 131 माताओं को सम्मानित किया गया और 131 महिला सभाओं/विशेष ग्राम सभाओं/विशेष एसएमसी बैठकों का आयोजन किया गया। जिन स्कूलों में लड़कियों के लिए अलग शौचालय की सुविधा नहीं है, उनकी पहचान की गई और 194 स्कूल न जाने वाली लड़कियों को उसी समय पुनः नामांकित किया गया। उपर्युक्त बताई गयी बाधाओं का सामना करते हुए जिले भर में 20,000 से अधिक लोगों ने भाग लिया। 484 आंगनवाड़ी केंद्रों में जन्म के आंकड़ों को फिर से पूरा किया गया।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

इस पहल को जमीनी स्तर पर आम जनता की जबरदस्त प्रतिक्रिया देखने को मिली। अतिरिक्त घटकों के साथ बड़े पैमाने पर इसके कार्यान्वयन की संभावनाएं हैं।

धार्मिक मंचों के माध्यम से संदेशों का प्रसारण

जिला फिरोजपुर, पंजाब

उद्देश्य

बालिकाओं को बचाने और शिक्षा में उनकी भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए संदेश प्रसारित करना।

गतिविधि का विवरण

फिरोजपुर के गांवों में अधिकांश लोग सिख धर्म को मानते हैं। यहां धार्मिक नेताओं द्वारा दिए गए संदेशों को समुदाय अच्छी तरह से समझता है। बालिकाओं को बचाने और शिक्षा में उनकी भागीदारी को बढ़ावा देने हेतु सकारात्मक संदेश प्रसारित करने के लिए जिले के विभिन्न गांवों में 70 सुखमनी पथ (पंजाब में एक धार्मिक समारोह) आयोजित किए गए। विभिन्न गुरुद्वारा साहिब में एकत्रित होने वाले लोगों को जेंडर आधारित लिंग चयन उन्मूलन एवं स्कूलों में लड़कियों को पढ़ाने और शादी की सही उम्र को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित किया गया।

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

स्केल्ड अप।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

ग्राम पंचायतों, गांव के अन्य मुख्य प्रतिनिधियों के साथ फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं के समन्वय ने गतिविधि की सफलता में प्रमुख योगदान दिया।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

लोगों की मानसिकता बदलना चुनौतीपूर्ण है। एक ऐसे धार्मिक मंच की पहचान करना ज़रुरी था, जिसके माध्यम से संदेशों को सही तरह से पहुँचाया जा सके और पितृसत्तात्मक मानसिकता को संबोधित किया जा सके।

> एक ऐसे धार्मिक मंच की पहचान करना जरूरी था, जिसके माध्यम से संदेशों को सही तरह से पहुँचाया जा सके और पितृसत्तात्मक मानसिकता को संबोधित किया जा सके।

जागरुकता बढ़ाने के साधन

बैनर और पोस्टर।

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

'बीबीबीपी' संदेशों के प्रसारण के लिए 70 सुखमनी पथ आयोजित किए गये।

गुणात्मक परिणाम/मान

इस प्रथा के परिणामस्वरूप लड़कियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा हुआ है।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

इस गतिविधि को अन्य गांवों में किया जाएगा।

बेटी बागीचा

जिला हरदोई, उत्तर प्रदेश

उद्देश्य

बेटियों की अहमियत को समुदाय के सदस्य के रूप में बढ़ावा देना।

गतिविधि का विवरण

राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर 24 जनवरी 2019 को बेटी बागीचा की पहल को जिला प्रशासन द्वारा हरदोई जिले के तोडरपुर ब्लाक की सैदपुर ग्राम पंचायत और कछौना ब्लॉक की गौसगंज ग्राम पंचायत में लागू किया गया था। इस पहल को शुरू करने का कारण यह था कि लड़कियों को श्राप समझा जाता था और उन्हें अनदेखा किया जाता था क्योंकि अब हमारे देश में बेटों को महत्व देने का चलन है। बेटे के जन्म लेने पर खुशी मनाई जाती है पर बेटियों के जन्म पर नहीं। ये पहल परिवारों को बेटी के जन्म पर ग्राम पंचायत द्वारा नियुक्त स्थान (सरकारी स्कूल/आंगनवाड़ी केंद्र में अप्रयुक्त सार्वजनिक जमीन या जगह) पर बेटी के नाम का पेड़ लगा कर उसके जन्म की खुशी मनाने के लिए प्रोत्साहित करती है, और इसे 'बेटी बागीचा' कहा जाता है। इससे बालिकाओं की उन्नति के लिए सकारात्मक वातावरण बनाने में मदद मिलती है।

इस जिले ने एक नए पौधे और नवजात बच्ची के विकास में समानता दिखाकर एक भावनात्मक सम्बंध स्थापित करने की कोशिश की है। अपनी बेटी को याद दिलाने के लिए, माता–पिता उसे उस ग्राम पंचायत की 'बेटी बागीचा' में अक्सर ले जाते है जहाँ उसके नाम का पेड़ लगाया गया था। यह उनका अपनी बेटी के प्रति सत्कार दिखाने का तरीका है कि चाहे वो शादी के बाद कही और ही क्यूँ ना चली जाए, वो हमेशा उस गाँव में याद की जाएगी और सम्मानित की जाएगी जहाँ उसने जन्म लिया था। 'बेटी बागीचा' में अधिकार दिखाने के लिए बेटी के नाम पर लगाए गये पेड़ पर बेटी और माँ के नाम की पट्टी भी लटकाई जाती है।।

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

इस गतिविधि को लागू करने के लिए 10 अतिरिक्त ग्राम पंचायतो को चुना गया है।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

इस गतिविधि की सफलता का मुख्य कारण बेटियों के परिवारों को फ्रंटलाइन कार्यकर्ता जैसे कि आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, आशा, सहायक नर्स दाई (एएनएम) और ग्राम प्रधान द्वारा प्रोत्साहन देना है। वे इस कार्य की सफलता के लिए जिम्मेदार हैं क्योंकि वे लोगों को प्रेरणा देने का मुख्य जरिया हैं। गौसगंज और सैदपुर ग्राम पंचायतों में परिवार ज़्यादा सक्रिय हैं क्योंकि वहाँ के ग्राम प्रधान और फ़्रंटलाइन कार्यकर्ताओं ने विशेष रूचि दिखायी है।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

पौधारोपण वाली जगह सार्वजनिक स्थान होने के कारण वहाँ पर लगाए गए पेड़ों की देखरेख करना एक चुनौती है। पेड़ों की देखभाल करने की जिम्मेदारी बेटियों के परिवार वालों, ग्राम प्रधान और फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं की है। लेकिन यह एक चुनौती है क्योंकि समय पर पौधों के संचय और उनकी देखभाल के लिए भागीदारों के बीच समन्वय होना आवश्यक है।

जागरुकता बढ़ाने के साधन

जागरूकता फैलाने के मुख्य स्रोत है फ्रंटलाइन कार्यकर्ता और ग्राम प्रधान।

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

गौसगंज में 75 और सैदपुर में 150 पेड़ लगाए जा चुके हैं।

गुणात्मक परिणाम/मान

ये पहल लोगों की सोच में बदलाव ला रही है क्योंकि माता–पिता अपनी बच्चियों को समय–समय पर उस जगह ले जाते हैं जहाँ उनके नाम का पेड़ लगाया गया है। प्रत्येक पेड़ पर बालिका के नाम की पट्टी लगी है, जिसके जन्म पर वह पेड़ लगाया गया था। यदि बेटियाँ शादी के बाद किसी दूसरे स्थान पर भी चली जायें, तब भी उनके नाम का पेड़ रहेगा।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

भविष्य में इस गतिविधि को सालाना हर ब्लॉक के 5 अतिरिक्त ग्राम पंचायतों में लागू किया जाएगा, यानी हर साल कुल मिलाकर 95 ग्राम पंचायतों में। पायलट योजना की सफलता के बाद इस गतिविधि को नियमित तौर से बढ़ाने से 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का संदेश ग्रामीण इलाकों में भी पहुँचाया जा सकेगा।

"ये पहल लोगों की सोच में बदलाव ला रही है क्योंकि माता-पिता अपनी बच्चियों को समय-समय पर उस जगह ले जाते हैं जहाँ उनके नाम का पेड़ लगाया गया है।"

भित्ती चित्रण (वॉल पेंटिंग)

जिला नैनीताल, उत्तराखंड

उद्देश्य

लिंग आधारित भेदभाव पर जागरूकता बढ़ाने के लिए कला की एक प्रभावी माध्यम के रूप में उपयोग करना।

गतिविधि का विवरण

इस हस्तक्षेप के पीछे पृष्ठभूमि यह है कि 2014–15 से, जब से इस योजना की शुरुआत हुई, नैनीताल जिले में जन्म के समय लिंग अनुपात (एसआरबी) में उतार–चढ़ाव देखा गया है। नैनीताल के जिला प्रशासन ने शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ से संबंधित विषयों पर छात्रों से भित्ती चित्र बनवा कर एक प्रगतिशील कदम उठाया है। एकीकृत बाल विकास सेवा (आईसीडीएस) विभाग ने लोगों के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए कला को एक प्रभावी माध्यम के रूप में प्रयोग करके इस पहल का नेतृत्व किया है। इन भित्ती चित्रों में कन्या भ्रूण हत्या, बाल विवाह, लड़कियों के लिए शिक्षा, सुरक्षा, महिला सशक्तिकरण, महिलाओं का स्वास्थ्य और पोषण आदि विषयों को दर्शाया गया है जो कि स्थानीय लोक सांस्कृतिक प्रथाओं से लिए गये हैं और जो स्वास्थ्य, पोषण, पर्यावरण आदि के साथ जुड़े हुए हैं। ग्रामीण स्तर पर, आंगनवाड़ी केंद्र भित्ती चित्रण का आयोजन करते हैं और समुदायों के बीच जिज्ञासा पैदा करके उन्हें जागरूक करते हैं। शहरी स्थलों जैसे कि फ्लैट्स, रिक्शा स्टैंड, अस्पताल आदि पर लगे भित्ती चित्र स्थानीय लोगों और पर्यटकों का भी ध्यान आकर्षित करते हैं।

भित्ती चित्रण की प्रतियोगिताओं का आयोजन महत्वपूर्ण दिनों पर किया जाता है, जैसे कि राज्य स्थापना दिवस, जिले में मुख्यमंत्री/मुख्य सचिव के दौरे के दौरान, आदि जिसमें जिले के भीतर अधिकतम लोग भाग लेते हैं। छात्रों को आईसीडीएस विभाग द्वारा कच्चा माल और उपकरण प्रदान किए जाते हैं। समूहों को उसी समय विषय दिए जाते हैं। प्रत्येक भित्ती चित्र का आकार अलग–अलग होता है, जबकि सामान्य रूप से इसका आकार 8X6 फीट होता है। इन भित्ती चित्रों की कम से कम सात साल तक चलने की उम्मीद रहती है।

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

प्रारंभ में, इस गतिविधि को एक कॉलेज के पांच छात्रों के समूहों के लिए लागू किया गया था। अब इसे बढ़ाया जा चुका है।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

इस गतिविधि का प्रतिस्पर्धात्मक स्वरूप और वित्तीय प्रलोभन व्यापक भागीदारी को प्रोत्साहित करते हैं। छात्र कलाकार नकद पुरस्कार की उम्मीद करते हैं क्योंकि यह छात्रों और उनके परिवारों के लिए वित्तीय सहायता का एक अच्छा स्रोत है।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

प्रतियोगिताओं के आयोजन के लिए समन्वय आमतौर पर एक चुनौती है।

जागरुकता बढ़ाने के साधन

आईसीडीएस विभाग द्वारा सामुदायिक लामबंदी।

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

भित्ती चित्रों को 999 आंगनवाड़ी केन्द्रों में लगाया गया है। इस पहल को 40 से अधिक छात्र कलाकारों के समूहों तक पहुँचने के लिए बढ़ाया गया है। इसमें आस–पास के जिलों से स्वयंसेवकों ने भी भाग लेना शुरू कर दिया है।

गुणात्मक परिणाम/मान

नैनीताल में समुदायों को जागरूक करने के लिए सामाजिक मुद्दों पर भित्ति चित्रों और मुराल को एक प्रभावी माध्यम के तौर पर स्वीकारा गया है, जो कि 'बीबीबीपी' वॉल पेंटिंग के जरिए सफलतापूर्वक पूरा किया जा रहा है। सामुदायिक भागीदारी विशेष रूप से जिले भर के कॉलेजों के छात्रों द्वारा, लोगों के कलात्मक कौशल को दिखाने और लैंगिक समानता पर भावनाओं को प्रचलित करने में मदद करती है। छात्र कलाकार इस अवसर का उपयोग अपने कलात्मक कौशल को व्यक्त करने के लिए करते हैं। इसके अलावा, सुंदर दिखने वाली मनोहर दीवारों से चित्रकारी की जनता तक पहुँच आसान हो जाती है और लोगों को अपने आस–पड़ोस के प्रति जिम्मेदारी महसूस करने के लिए मजबूर करती है।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

वॉल पेंटिंग प्रतियोगिताएं महत्वपूर्ण दिनों पर जिले के सार्वजनिक स्थलों पर आयोजित की जाएंगी। इस पहल को बढ़ाने और जिले के भीतर अधिकतम पहुँच बनाने की तैयारी की जा रही है। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, ग्रामीण विकास आदि जैसे अन्य विभागों के साथ मिलकर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा।

अव्वल आने वाली लड़कियों और लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने वाले स्कूलों को पुरस्कृत करना

जिला पूर्वी कामेंग, अरुणाचल प्रदेश

उद्देश्य

लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देना।

गतिविधि का विवरण

जिले में लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए जिला प्रशासन उन छात्राओं को, जो पढ़ाई में अव्वल आई हों, और उन स्कूलों को जो लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए खास क़दम उठाते हैं, सालाना एक जिला स्तरीय पुरस्कार समारोह में पुरस्कृत करता है।

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

पायलट।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

इस पहल की सफलता के पीछे मुख्य कारक मान्यता और पुरस्कार के 'प्रत्यक्ष लाभ' हैं।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

भागीदारों के साथ समन्वय रखना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

जागरुकता बढ़ाने के साधन

होर्डिंग्स और जिला शिक्षा विभाग और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा प्रचार–प्रसार।

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

अब तक 22 लड़कियों और आठ स्कूलों को मान्यता दी गई है और पुरस्कृत किया गया है।

गुणात्मक परिणाम/मान

सार्वजनिक रूप से योग्य महिला उम्मीदवारों और सक्रिय स्कूलों को मान्यता मिलने से समुदाय और बेहतर करने के लिए प्रेरित होता है। छात्र प्रोत्साहित होते हैं और उनके पालन–पोषण में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसी तरह, लड़कियों को शिक्षित करने और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए स्कूल प्रेरित होते हैं।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

यह कार्यक्रम हर साल आयोजित किया जाएगा।

धार्मिक नेताओं का संवेदीकरण

जिला सेनापति, मणिपुर

उद्देश्य

धार्मिक नेताओं को 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' के बारे में जागरूक करना।

गतिविधि का विवरण

इस हस्तक्षेप के पीछे की पृष्ठभूमि यह है कि सेनापति जिला एक ईसाई बहुमत वाला जिला है, जिसमें 90 प्रतिशत जनता ईसाई धर्म के अलग–अलग संप्रदाय जैसे कि कैथोलिक, बैपटिस्ट, रिवाइवल, आदि के हैं। समुदाय के चरित्र को बनाने में धर्म का बड़ा प्रभाव होता है। चूंकि जिला पिछले पांच वर्षों से जन्म के समय लिंग अनुपात में उतार–चढ़ाव अनुभव कर रहा है, इसलिए लड़कियों के लिए इस असमान वास्तविकता को संबोधित करना महत्वपूर्ण है। इस उद्देश्य से, सेनापति में एकीकृत बाल विकास सेवा (आईसीडीएस) प्रकोष्ठ ने लैंगिक समानता पर विशेष जोर देते हुए बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ (बीबीबीपी) पर धार्मिक नेताओं को जागरूक करने के मिशन को प्रारम्भ किया है। 2019–20 में, इसने जिले की प्रमुख जनजातियों जैसे कि मरम, माओ, पूमई, थंगल, जेलियानगोंग और कूकी के धार्मिक नेताओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए थे।

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

पायलट।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

प्रत्येक जनजाति का एक सर्वोच्च धार्मिक समूह होता है, इन समूहों की सहकार्यता ने इस कार्यक्रम की सफलता में योगदान दिया है। इसके अलावा, प्रतिभागियों के साथ निरंतर संचार ने भी पायलट को सफल बनाने में योगदान दिया है।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

सेनापति जिले में विभिन्न जनजातियां निवास करती हैं, और सभी की बोली अलग है। प्रत्येक जनजाति के लिए उचित विशेषज्ञों को खोजना एक चुनौती था। इसके अलावा, आदिवासी जनसंख्या बहुत मजबूत है और अलग जनजाति के विशेषज्ञ की स्वीकृति भी एक चुनौती है।

जागरुकता बढ़ाने के साधन

अभियान के लिए पैम्फलेट, ब्रोशर, होर्डिंग्स, स्थानीय दैनिक समाचार पत्रों में विज्ञापन और पोस्टर/स्टिकर आदि कुछ ऐसे संसाधन हैं जो जागरूकता फैलाने के लिए उपयोग किए गए थे।

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

इसमें दस संवेदीकरण कार्यक्रम आयोजित किए गए थे और कुल 392 चर्च अधिनायकों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

गुणात्मक परिणाम/मान

प्रशिक्षण कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप, भाग लेने वाले धार्मिक नेता लैंगिक समानता पर विशेष जोर देने के साथ, रविवार की चर्च सेवाओं के दौरान लोगों तक 'बीबीबीपी' के संदेश को पहुँचा रहे हैं। धीरे–धीरे, जिले में लोग लैंगिक समानता के महत्व के बारे में अधिक जागरूक हो रहे हैं। लोगों के बीच जागरूकता स्तर का एक स्पष्ट नमूना यह है कि गांव के अधिनायक और जनजातियों के सरदार 'बीबीबीपी' से जुड़े सवालों को लेकर आगे आ रहे हैं और योजना के तहत सहायता प्राप्त करने में रुचि रखते हैं।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

इस कार्यक्रम को पूरे जिले में लागू करने की गुंजाइश है क्योंकि पायलट कार्यक्रम के प्रतिभागी बहुत ही उत्तरदायी थे।

अबेम्मा-अबुंगो बोर्ड

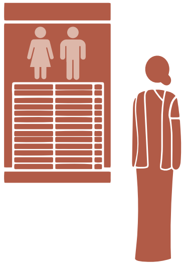

जिला थौबल, मणिपुर

उद्देश्य

जिले में जन्म के समय लिंग अनुपात में वृद्धि लाना।

गतिविधि का विवरण

मणिपुर के थौबल जिले में जन्म के समय लिंग अनुपात में उतार–चढ़ाव (एसआरबी) एक चिंता का विषय है, जिसकी वार्षिक गणना स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय (एमओएचएफडब्ल्यू) की स्वास्थ्य प्रबंधन सूचना प्रणाली (एचएमआईएस) के द्वारा की जाती है। लेकिन एचएमआईएस घर पर होने वाले प्रसव और जो प्रसव जिले के बाहर स्थित संस्थाओं में हुए हैं, उनकी गणना नहीं करता है। इन परिस्थितियों में, जिला टास्क फोर्स ने निर्णय लिया कि एचएमआईएस डाटा को फिर से जांचा जाए और जिले में हुए जन्मों की रिपोर्टिंग की समीक्षा की जाए। रिपोर्टिंग प्रणाली में कमी को सुव्यवस्थित करने के लिए यह तय किया गया कि आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और आशा जैसे फ्रंटलाइन कार्यकर्ता गुड्डी–गुड्डा बोर्ड को अनुकूलित करेंगे और बराबर एसआरबी को बढ़ावा देने के लिए स्थानीय भाषा में अबेम्मा–अबुंगो बोर्ड का नाम देंगे। तालिका के आकार का जनवरी से दिसंबर तक का एक वर्षीय प्रदर्शन बोर्ड बनाया गया, और 14 नवंबर 2019 को बाल दिवस के पर्व के तहत आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और आशा को आंगनवाड़ी केंद्रों और स्वास्थ्य संस्थानों में लगाने के लिए अबेम्मा–अबुंगो बोर्ड वितरित किए गए थे। जन्म के स्थान और विधि को महत्व न देते हुए, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और आशा द्वारा हर महीने डाटा अपडेट किया जाता है। इन केंद्रों पर किए जाने वाले निरीक्षण दौरों के वक़्त उस स्थान का जन्म के समय का लिंग अनुपात और आवश्यक लक्षित हस्तक्षेपों की ज़रुरत को समझा जाएगा।

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

इसे नवंबर 2019 में थौबल जिले के सभी आंगनवाड़ी केंद्रों में शुरु किया गया था।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

आशा व आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का प्रतिबद्धता से अबेम्मा–अबुंगो बोर्ड को अपडेट करना इस हस्तक्षेप की सफलता के पीछे एक कारक है।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

मुख्य चुनौतियाँ (क) बोर्ड पर हर महीने अपडेट किए गए डाटा की जांच करने, (ख) समय–समय पर पूरे जिला में डाटा की समीक्षा करने, और (ग) हस्तक्षेपों को सही समय पर लागू करने से संबंधित थीं।

जागरुकता बढ़ाने के साधन

आम जनता और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को लक्षित करने वाले कार्यक्रमों के दौरान, बोर्ड के महत्व पर पैम्फलेट और भाषण आयोजित किए गए थे।

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

अबेम्मा–अबुंगो बोर्ड की रिपोर्ट पर विचार किया जा रहा है और एसआरबी में सालाना रुप से कम से कम दो अंकों की बढ़ोत्तरी लाने के लिए, मुख्य हितधारकों को ध्यान में रखते हुए, अपेक्षित कार्रवाई की जा रही है। कार्यान्वयन के प्रारंभिक तीन महीनों के लिए अबेम्मा–अबुंगो बोर्ड का विश्लेषण निम्नानुसार है:

आंकड़ा स्रोत	महिला	पुरूष	एसआरबी
अबेम्मा–अबुंगो बोर्ड	431	476	905
एचएमआईएस	266	336	791

बोर्ड को थौबल जिले में 947 आंगनवाड़ी केंद्रों और 51 स्वास्थ्य संस्थाओं में वितरित किया गया था। जब बोर्ड पर एसआरबी की तुलना एचएमआईएस रिपोर्टिंग से की जाती है, तो दोनों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर देखा जाता है।

गुणात्मक परिणाम/मान

बोर्ड से थौबल जिले में होने वाले प्रसव, चाहे संस्थागत हो या गैर–संस्थागत, की सही संख्या और प्रकार उजागर होते हैं। जिले के भीतर या जिले के बाहर होने वाले जन्मों को दर्ज किया जाता है, जबकि एचएमआईएस की रिपोर्ट केवल उन प्रसवों को दर्शाती है जो थौबल जिले के भीतर सरकारी स्वास्थ्य संस्थाओं में हुए हैं। लक्षित हस्तक्षेप उन इलाकों में किए जा रहे हैं जहाँ एसआरबी लगातार कम रहा है; यह केवल एचएमआईएस रिपोर्टिंग पर निर्भर होने से संभव नहीं था।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

अगले चरण में सभी संस्थागत एवं गैर–संस्थागत प्रसवों और स्वास्थ्य सुविधाओं व घर पर हुए प्रसवों को जांचने के लिए बोर्ड को संशोधित किया जाएगा।

हॉकी प्रदर्शनी मैच

जिला सरछिप, मिज़ोरम

उद्देश्य

लड़कियों को प्रतिस्पर्धात्मक रूप से हॉकी खेलने के लिए चुनना और उन्हें प्रेरित करना।

गतिविधि का विवरण

सरछिप में जिला प्रशासन द्वारा लड़कियों को बालिका हॉकी अकादमी में दाखिला लेने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' के तहत चार गांवों, अर्थात् (क) खावलैलूंग, (ख) ईलुंगदर, (ग) लुंग्फो, और (घ) बुंगतलंग में थेनज़ोल हॉकी अकादमी के सहयोग से जिला हॉकी प्रदर्शनी मैच एवं कौशल प्रदर्शनी आयोजित किया गया था। इस अकादमी से 23 छात्रों ने अपने कौशल का प्रदर्शन किया और चार गांवों की लड़कियों के साथ हॉकी का खेल खेला। इस कार्यक्रम का आयोजन लड़कियों को बढ़ावा देने और उनके करियर को बनाने के उद्देश्य से किया गया था और साथ ही जिले में उनकी प्रतिभा को पहचानना था।

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

स्केल्ड अप।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

इस गतिविधि की सफलता में कई कारकों का योगदान रहा। भाग लेने वाली लड़कियों को सभी उपकरण दिए गए, उन्हें प्रशिक्षित खिलाड़ियों द्वारा कौशल प्रदान किया गया, और इसके लिए जिला प्रशासन का सहयोग महत्वपूर्ण रहा और प्रमुख भागीदारों के बीच समन्वय की भावना लाभकारी साबित हुई।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

प्रदर्शनी के दौरान एकमात्र चुनौती यह थी कि उपरोक्त चार गांवों में लड़कियों तक पहुँचना और उन्हें इकट्ठा करना कठिन था क्योंकि उस क्षेत्र में हॉकी एक लोकप्रिय खेल नहीं है।

जागरुकता बढ़ाने के साधन

प्रत्येक गाँव में जागरूकता फैलाने और अभ्यास करने के लिए सूचना, शिक्षा और संचार (आईईसी) सामग्री, हॉकी स्टिक और हॉकी बॉल दिए गए थे।

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

करीब 300 लड़कियों ने भाग लिया था, जिनमें से एक प्रतिभाशाली लड़की को थेनज़ोल की बालिका हॉकी अकादमी में प्रशिक्षण के लिए चुना गया था।

गुणात्मक परिणाम/मान

इस गतिविधि के माध्यम से 'बीबीबीपी' के संदेश को ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों तक पहुँचाया गया। हॉकी समुदाय के लोगों के बीच एक लोकप्रिय खेल नहीं है, लेकिन इस गतिविधि के माध्यम से लोगों को

> हॉकी समुदाय के लोगों के बीच एक लोकप्रिय खेल नहीं है, लेकिन इस गतिविधि के माध्यम से लोगों को एहसास हुआ कि वे हॉकी खेलने की भावना को पुनः उत्पन्न करना चाहते हैं और गाँवों में बालिकाओं की छिपी हुई प्रतिभाओं को पहचान कर इस खेल में उनके करियर को बनाने में मदद करना चाहते हैं।

एहसास हुआ कि वे हॉकी खेलने की भावना को पुनः उत्पन्न करना चाहते हैं और गाँवों में बालिकाओं की छिपी हुई प्रतिभाओं को पहचान कर इस खेल में उनके करियर को बनाने में मदद करना चाहते हैं। खेल को सीखने के प्रति लड़कियों की लगन और प्रशिक्षकों (पेशेवर) द्वारा दिए गए अच्छे नेतृत्व के साथ–साथ दल के भीतर विश्वास और प्रोत्साहन होने से उन लड़कियों को मदद मिली, जिन्हें प्रतियोगिता संबंधी हॉकी खेलने के लिए प्रेरित किया गया था।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/ भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

एक सफल पायलट के परिणाम स्वरूप, तीन गांवों में एक और हॉकी प्रदर्शनी मैच करने की योजना बनाई जा रही है। 'बीबीबीपी' स्थानीय चैंपियंस, जिनका समुदाय में खास नाम है और जो कार्यक्रम का प्रचार–प्रसार कर सकते हैं, के साथ बातचीत करके उचित स्थानों का चयन किया जाएगा।

अपने उप-आयुक्त और पुलिस अधीक्षक को जानना

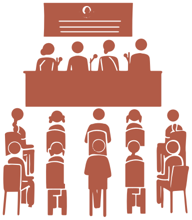

जिला तुएनसांग, नागालैंड

उद्देश्य

अपने सपनों को पूरा करने के लिए किशोरियों को प्रेरित करना, सलाह देना और प्रेरणा देना।

गतिविधि का विवरण

जिला प्रशासन और पुलिस के साथ तुएनसांग और थंगजाम के सरकारी उच्चतर माध्यमिक स्कूलों की 45 किशोरियों के लिए 'अपने उप–आयुक्त और पुलिस अधीक्षक को जानो' नामक संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया था। इस गतिविधि का उद्देश्य किशोरियों को अपने सपने पूरे करने को लेकर ईमानदार और समर्पित बनने के लिए प्रेरित करना, सलाह देना और प्रेरणा देना था। इसके अलावा, इससे उन्हें जिले में स्थित दो सबसे महत्वपूर्ण संस्थानों के कामकाज से परिचित होने का अवसर भी मिला।

छात्रों ने उप–आयुक्त के कार्यालय का दौरा किया और बातचीत के दौरान, उनके प्रश्न सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी, प्रतियोगी परीक्षाआ में सफल होने के लिए किन आदतों और दृष्टिकोण को अपनाना चाहिए, अध्ययन के लिए आवश्यक सामग्री, आदि आजीविका से संबंधित विषयों पर केंद्रित थे। छात्रों ने अपने स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं, पुस्तकालय, शौचालय, आदि से जुड़ी समस्याओं को भी चिन्हांकित किया। छात्रों को कार्यालय के भीतर विभिन्न शाखाओं का भ्रमण भी कराया गया, जहाँ उन्हें प्रत्येक शाखा के काम करने के तरीकों के बारे में जानकारी दी गई। लड़कियों को उप–आयुक्त के बंगले में स्थित निवासी शिविर कार्यालय का दौरा करने का भी अवसर दिया गया।

पुलिस अधीक्षक के साथ बातचीत के दौरान, लड़कियों को समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए जिम्मेदार और कुशल नागरिक बनने के लिए प्रोत्साहित किया गया। फिर उन्हें मूल यातायात के नियमों, यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण करने संबंधी अधिनियम के उचित नियमों और धाराओं, किशोर न्याय अधिनियम, भारतीय दंड संहिता, आदि के बारे में जानकारी दी गई। छात्रों को एसपी कार्यालय की प्रत्येक शाखा का भ्रमण करने का मौका दिया गया और इस दौरे को पुलिस थाने का दौरा करा के समाप्त किया गया।

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

यह एक पायलट पहल थी। लेकिन छात्रों के उत्साह और इसका छात्रों पर सकारात्मक प्रभाव देखते हुए, आने वाले दिनों में इस तरह के महत्वपूर्ण कार्यालयों के भ्रमण को अक्सर की जाने वाली गतिविधि बनाया जाएगा।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

छात्रों का उत्साह, विद्यालय के संकाय सदस्यों का सक्रिय समर्थन और डीसी और एसपी की उपलब्धता वो कारक थे जिन्होंने गतिविधि की सफलता में योगदान दिया।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

डीसी और एसपी दोनों व्यस्त सरकारी प्रभारी हैं। उनके साथ बातचीत के लिए, जिसकी अवधि 3–4 घंटे की हो सकती है, समय प्राप्त करना मुश्किल होता है।

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

इस पहल से 45 किशोरियाँ लाभान्वित हुई हैं।

गुणात्मक परिणाम/मान

जिला स्तर पर सबसे महत्वपूर्ण कार्यकर्ताओं के साथ आमने–सामने की बातचीत ने छात्रों के मस्तिष्क पर एक स्थायी छाप छोड़ी है। इस अवसर ने जीवन में सफल होने के उनके दृढ़ संकल्प को बल दिया है। हालांकि वे जानते हैं कि डीसी और एसपी कौन हैं, छात्रों को उनके साथ लाइव बातचीत करने का अवसर शायद ही मिलता है। इस गतिविधि के माध्यम से, छात्रों को अधिकारियों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों से अवगत कराया गया और बताया गया कि वे कैसे उनसे संपर्क कर सकते हैं। इस प्रकार, इस गतिविधि ने छात्रों को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु और भी कठिन प्रयास करने के लिए एक सकारात्मक प्रेरक के रूप में काम किया है। दूसरे शब्दों में, डीसी और एसपी उनके प्रेरणास्रोत बन गए हैं, जिनसे उन्हें प्रेरणा मिल सकती है। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ ने जनता और सरकार के बीच बातचीत को सुविधाजनक बनाने वाले इंटरफेस के रूप में काम किया। दूसरी ओर, डीसी, हाई स्कूल के स्कूल प्रबंधन बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में, छात्रों द्वारा उठाए गए मुद्दों के निवारण के लिए उपयुक्त अधिकारियों के साथ मामलों को उठा सकते हैं।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

छात्रों के लिए डीसी और एसपी के साथ बातचीत उपयोगी और प्रेरणादायक है। प्रेरणा एक बार दी जाने वाली गोली नहीं है, जो सफलता सुनिश्चित करेगी। इस पहल को नियमित रुप से लंबे समय तक लगातार आयोजित करने की आवश्यकता है ताकि अच्छा परिणाम प्राप्त हो सके। इस दिशा में एक कदम उठा कर, छात्रों के लिए जीविका पर मार्गदर्शन और कोचिंग क्लास जैसी गतिविधियों की योजना बनाई जा रही है जिसमें विभिन्न विभागों और विषयों से सम्बंधित अधिकारियों को अतिथि/विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया जाएगा।

स्कूल प्रबंधन समितियों के माध्यम से बाल विवाह को रोकना

जिला बीजापुर, छत्तीसगढ़

उद्देश्य

बाल विवाह रोकने और स्कूल में लड़कियों का शत–प्रतिशत नामांकन सुनिश्चित करने के लिए स्कूल प्रबंधन समितियों को मजबूत बनाना।

गतिविधि का विवरण

जिन लड़कियों की शादी 18 साल से कम उम्र में हो जाती है, उनकी अपने साथियों की तुलना में स्कूल जाने की संभावना कम होती है और जो लड़कियाँ स्कूल छोड़ देती हैं, उनकी शादी 18 साल की उम्र से पहले हो जाने की संभावना अधिक होती है। बाल विवाह और स्कूल छोड़ रही लड़कियों के बीच एक स्पष्ट संबंध स्थापित करने के लिए ब्लॉक और क्षेत्र स्तर (प्रत्येक क्षेत्र में 30–35 आंगनवाड़ी केंद्र शामिल हैं) पर स्कूल प्रबंधन समिति (एसएमसी) के सदस्यों और सामुदायिक नेताओं के बीच बैठकें आयोजित की जाती हैं। 10–14 अक्टूबर 2019 के दौरान स्कूलों और स्थानीय बाजारों में बाल विवाह की रोकथाम और लड़कियों के लिए न्यूनतम शिक्षा को पूरा करने हेतु सामुदायिक साधनों जैसे कि नाटकों, नुक्कड़ नाटक और कठपुतली शो के माध्यम से एक बड़े पैमाने पर जागरूकता अभियान चलाया गया था। एसएमसी अंततः अपनी बेटियों को शिक्षित करने और विवाह में देरी के लिए परिवारों को प्रोत्साहित करने में मदद करते हैं।

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

इस पहल को भैरमगढ़ ब्लॉक में शुरू किया गया था और भैरमगढ़ सहित इसे चार ब्लॉक और बीजापुर जिले के 44 क्षेत्रों में बढ़ाया गया है।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

जिला प्रशासन की सक्रिय भागीदारी और ब्लॉक स्तर पर सामुदायिक नेताओं, पीआरआई सदस्यों और एसएमसी आदि के सहयोग ने इस पहल की सफलता में योगदान दिया है।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

बीजापुर जिले में समुदाय के लोग पारंपरिक प्रथाओं को मानते हैं, जो लड़कियों की शैक्षिक संभावनाओं में बाधा डालते हैं। समुदाय में साक्षरता का कम स्तर और रुचि की कमी के कारण, यहां शिक्षा को महत्व नहीं दिया जाता और लड़कियों को स्कूली शिक्षा प्राप्त करने के अवसर नहीं दिए जाते हैं। समुदाय को अलग तरह से सोचने के लिए समझाना चुनौतीपूर्ण है।

जागरुकता बढ़ाने के साधन

एसएमसी सदस्यों, सामुदायिक नेताओं और पंचायती राज संस्थानों के सदस्यों ने जागरूकता बढ़ाने में मदद की।

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

विभिन्न ब्लॉकों से करीब 2430 समुदाय के लोगों और एसएमसी सदस्यों को संवेदनशील बनाया गया, जिनमें से बीजापुर से 350, भैरमगढ़ से 530, उसुर से 250 और भोपालपट्टनम से 350 लोग थे। इसी तरह, बीजापुर ब्लॉक के 87 स्कूलों, उसूर के 62 स्कूलों, भैरमगढ़ के 132 स्कूलों और भोपालपट्टनम के 87 स्कूलों को लक्षित कर संवेदनशील बनाया गया। इस अभियान के कारण दो लड़कियों का स्कूल में नामांकन और 35 स्कूल छोड़ चुकी लड़कियों को फिर से नामांकित किया गया है।

गुणात्मक परिणाम/मान

जागरूकता बढ़ाना इस पहल का मुख्य परिणाम है। समुदाय को लड़कियों की शिक्षा के महत्व को और बाल विवाह के हानिकारक प्रभावों को समझाने के साथ–साथ अपनी मानसिकता को बदलने के लिए संवेदनशील बनाया जा रहा है।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

जिले में बाल विवाह को रोकने और लड़कियों की न्यूनतम शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए सहयोगात्मक प्रयास जारी रहेगा।

> जिला प्रशासन की सक्रिय भागीदारी और ब्लॉक स्तर पर सामुदायिक नेताओं, पीआरआई सदस्यों और एसएमसी आदि के सहयोग ने इस पहल की सफलता में योगदान दिया है।

शुचिता - पाँच स

जिला अशोकनगर, मध्य प्रदेश

उद्देश्य

स्कूल छोड़ चुकी और स्कूल जाने वाली लड़कियों को माहवारी सम्बंधी साफ–सफाई का पालन करने के लिए शिक्षित करना।

गतिविधि का विवरण

इस पहल का विचार, विषय और चिन्ह जिला कलेक्टर द्वारा तय किया गया था। लड़कियाँ माहवारी के दौरान स्कूल जाना छोड़ देती हैं और यह लड़कियों के स्कूल छोड़ने का एक प्रमुख कारण है। लड़कियों की जरूरतों को स्पष्ट रूप से समझने के लिए गाँव और स्कूल के स्तर पर चर्चाएँ की गयी थीं। शुचिता – 'पाँच स' (स्वच्छता, सुरक्षा, स्वास्थ्य, सम्मान और स्वावलंब) अभियान (24 जुलाई 2019 को प्रारम्भ किया गया और 31 मार्च 2020 को समाप्त होगा) का उद्देश्य स्कूल जाने वाली और स्कूल छोड़ चुकी किशोरियों के विकास को जोड़ना और माहवारी सम्बंधी साफ–सफाई के पालन (एमएचएम) के बारे में लड़कियों को शिक्षित करके उनके बीच ड्रॉप आउट रेट को कम करना है। इसे अन्य योजनाओं के साथ सम्मिलित करके लागू किया गया है। (1) स्वच्छता एमएचएम पर जागरूकता बढ़ाती है, (2) सुरक्षा का उद्देश्य है मातृ मृत्यु दर को कम करना, (3) स्वास्थ्य स्वच्छ आदतों को बढ़ावा देता है, (4) सम्मान का उद्देश्य है यह सुनिश्चित करना कि माहवारी मान और गर्व की बात है, और (5) स्वावलम्बन स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के लिए रोजगार उत्पन्न करता है। पहले चरण में लड़कियों तक पहुँचना, स्वास्थ्य पर और अफवाहों को झूठा साबित करने के लिए परामर्श शिविर करना, सैनिटेरी नैपकिन का स्वयं सहायता समूहों के जरिए उत्पादन और विक्रय करना, चुनिंदा स्कूलों में वेंडिंग मशीन और नैपकिन नष्ट करने वाले यंत्र (incinerator) लगाना, और प्रेरणादायक और हौसला अफ्जाई करने वाले सेमिनार का आयोजन करना और अधिक प्रचार के लिए, पाँच स के सिद्धांत के साथ–साथ इस पहल के मूल विचार और उद्देश्यों को दर्शाने के लिए चिन्ह का प्रयोग किया गया था।

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

पहले चरण में 11 माध्यमिक स्कूलों और 28 छात्रावासों की लड़कियों तक पहुँचना शामिल था।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

जिला कलेक्टर की प्रतिबद्धता ने इस गतिविधि की सफलता में अहम भूमिका निभाई। जो नीचे से ऊपर का दृष्टिकोण अपनाया गया था, उसमें कार्य योजना की रूपरेखा शामिल थी, जिससे जमीनी स्तर की मुश्किलों पर विचार और विभागों में समन्वय सुनिश्चित किया जा सका। मीडिया आधारित हिमायत ने भी खास भूमिका निभाई।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

माहवारी सम्बंधी चर्चा करने में समुदाय हिचकता है और ये एक बहुत बड़ी चुनौती रही है। अच्छी किस्म के सैनिटेरी नैपकिन की उपलब्धता सुनिश्चित करना भी एक चुनौती थी। हालाँकि ये उत्पाद उपलब्ध थे, पर ये ज्यादातर पहुँच से बाहर थे।

जागरुकता बढ़ाने के साधन

डिजिटल, प्रिंट और सोशल मीडिया, हर एक लड़की के साथ चर्चाएं, स्कूलों और समुदाय स्तर पर अफवाहों को झूठा साबित करने के लिए शिविर, एनजीओ और युवा/समुदाय वर्गों की सक्रिय भागीदारी, और मुख्य विभागों द्वारा जागरूकता अभियान।

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

पहले चरण में 11 माध्यमिक स्कूलों और 28 छात्रावासों की लड़कियों को अच्छी क़िस्म के, खरीदने योग्य सैनिटेरी नैपकिन एक रुपय प्रति नैपकिन की दर पर बेचने के लिए पहुँच बनाना, और प्रतिदिन 250 सैनिटेरी नैपकिन का उत्पादन करने के लिए पाँच स्वयं सहायता समूहों का चुनाव शामिल था (इससे पाँच स्वयं सहायता समूहों के 60 सदस्यों का नियमित रोजगार सुनिश्चित हो सकता है)। वर्तमान के शिक्षा सत्र में स्कूलों में हाजरी 72 प्रतिशत से 85 प्रतिशत तक बढ़ी है। कुल 2,65,000 सैनिटेरी पैड इस्तेमाल किए जा चुके हैं (20 फरवरी 2020 तक)।

गुणात्मक परिणाम/मान

इस पहल के परिणामस्वरूप स्वास्थ्य पर और अफवाहों को झूठा साबित करने वाले शिविर, और साथ ही प्रेरणदायक और आत्मविश्वास बनाने वाले सेमिनार की मदद से माहवारी संबंधित जागरूकता के स्तर में वृद्धि हुई है। इसमें अच्छी किस्म के स्त्रियों के लिए स्वच्छता सम्बंधी उत्पाद शामिल हैं। अब आम समझ ये है कि माहवारी जैसे अमान्य माने जाने वाले विषय पर अब चर्चा होने लगी है।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

दूसरे चरण में जिले की सभी लड़कियों (12–18 वर्ष) तक पहुँचा जाएगा।

स्वागतम नंदिनी

जिला कटनी, मध्य प्रदेश

उद्देश्य

नवजात बच्चियों को सम्मान देना।

गतिविधि का विवरण

इस पहल की शुरुआत लड़कियों के जन्म की खुशी मनाने के लिए की गयी थी, जिन्हे परिवार पर बोझ समझा जाता है। इस पहल के अंतर्गत, प्रशासन अधिकारी और समुदाय के नेता पूरे जिले में उन माता–पिता के घरों में जाते हैं जहाँ नवजात बच्चियों ने जन्म लिया है। बच्ची के जन्म पर एक छोटा सा समारोह करके, नवजात बच्चियों के माता–पिता को उच्च पद्धति के पेशेवर व्यक्तियों और सामुदायिक नेताओं द्वारा बच्चों का सामान, लाडली लक्ष्मी सर्टिफिकेट और फूलों की माला देकर सम्मानित किया जाता है। यह गतिविधि होशियारी और कुशलता से लाडली लक्ष्मी योजना के साथ सम्मिलित की जा सकती है।

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

इस क्रिया को बढ़ाया जा चुका है और वर्तमान में इसे पूरे जिले में लागू किया जा रहा है।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

उच्च पद्धति के व्यक्तियों द्वारा भ्रमण इस गतिविधि की सफलता का महत्वपूर्ण पहलू है। जिला प्रशासन के अधिकारी जिले के सबसे पिछड़े गाँवों तक जाते हैं, जो उनके इस विषय के प्रति समर्पण और जिम्मेदारी को दिखाता है। इस पहल को अधिकतर लोगों की स्वीकृति प्राप्त हुई थी। आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और आशा द्वारा छोटी मंडलियों में, जिनमें अधिकारी भी शामिल होते हैं, ढोलक और मझीरा बजा कर और खुशी के गाने गा कर जो बुनियादी भूमिका निभाई गयी, उसे भी सराहना मिली।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

कुछ ऐसे पिछड़े इलाके थे जहाँ पहुँचना चुनौतिपूर्ण था, खासकर छोटे गाँव और छोटी बस्तियाँ।

जागरुकता बढ़ाने के साधन

घर–घर जा कर अभियान।

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

अब तब 504 बेटियों और उनके माता–पिता को सम्मानित किया जा चुका है।

गुणात्मक परिणाम/मान

प्रशासनिक और राजनीतिक दिग्गजों द्वारा घर आकर बेटियों के जन्म की खुशी मनाने से नवजात लड़कियों के माता–पिता को सम्मानित महसूस हुआ।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/ भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

इस पायलट में समाज में लड़कियों के प्रति लोगों की मानसिकता को बदलने की क्षमता है। इसकी वजह से लड़कियों के जन्म का स्वागत किया जाएगा और उन्हें स्वास्थ्य, शिक्षा और सम्पूर्ण विकास के लिए अवसर प्राप्त होंगे। अन्य इलाकों में इसको कार्यन्वित करने की भविष्य में संभावनाएँ और गुंजाइश है, क्योंकि ये एक युगांतकारी गतिविधि साबित हो सकती है जो बेटे की चाह रखने से जुड़ी सामाजिक रूढ़िवादी सोच को तोड़ सकती है। लोगों के प्रतिनिधियों और प्रशासकीय अधिकारियों द्वारा बेटियों वाले परिवारों से मिलना उन परिवारों को गर्व महसूस कराता है और यह संदेश देता है कि लड़कियों का जन्म परिवारों के लिए सम्मान की बात है।

बाल विवाह को समाप्त करना

जिला विजयपुर, कर्नाटक

उद्देश्य

लड़कियों को बाल विवाह की प्रथा की सूचना देने के लिए प्रेरित करना।

गतिविधि का विवरण

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के अंतर्गत, खकंडकी गाँव में बाल विवाह को समाप्त करने हेतु चलाए गये जागरूकता अभियानों के कारण, जिला प्रशासन को गाँव में सम्भावित बाल विवाह रोकने में सफलता मिली है। इस पहल के तहत जागरूकता कार्यक्रमों और माताओं व किशोरी बैठकों का भी आयोजन किया जाता है।

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

ये एक नियमित तौर पर होने वाली गतिविधि है।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

जिला बाल सुरक्षा अधिकारी (डीसीपीओ), आंगनवाड़ी निरीक्षक और आंगनवाड़ी कार्यकर्ता तक आसानी से पहुँचा जा सकता है और वे बाल विवाह की प्रथा को समाप्त करने के प्रति प्रतिबद्ध हैं। वे प्रभावकारी ढंग से लड़कियों पर बाल विवाह के हानिकारक प्रभाव को संचारित कर रहे हैं। उन्हें जैसे ही इस तरह के मामलों की खबर मिलती है, वे तुरंत कदम उठाते हैं और दंडात्मक उपायों की तरफ ध्यान खींचते हैं। इन कारणों ने जागरूकता बढ़ाने वाले अभियानों को प्रभावी बनाने में सफलतापूर्वक योगदान दिया है।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

खकंडकी गाँव का समुदाय बाल विवाह को रोकने के लिए सरकार के प्रयासों के खिलाफ है। महिला एवं बाल विकास विभाग (डीडब्ल्यूसीडी) के अधिकारी, खासकर कि फ्रंटलाइन कार्यकर्ता, बाल विवाह की बुराइयों को समुदाय के सदस्यों को समझाने के लिए अतिरिक्त प्रयास करते हैं।

जागरुकता बढ़ाने के साधन

नाटक और कानूनी जागरूकता कार्यक्रम।

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

पिछले दो वर्षों में एक लड़की को बाल विवाह से सफलतापूर्वक बचाया जा चुका है।

गुणात्मक परिणाम/मान

बाल विवाह को समाप्त करने के लिए डीडब्ल्यूसीडी द्वारा चलाए गये जागरूकता अभियानों से समुदाय शिक्षित हुआ है। लड़कियों में अपने बाल विवाह की सूचना देने का आत्मविश्वास बढ़ रहा है। जिस लड़की को बाल विवाह से बचाया गया था, वो अपनी पढ़ाई पूरी कर रही है और अन्य लड़कियों और छात्राओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है। वह बाल विवाह के खिलाफ सफल लड़ाई का प्रतीक है।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/ भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

डीडब्ल्यूसीडी जागरूकता बढ़ाने वाली प्रभावपूर्ण रैलियाँ करता रहेगा।

> बाल विवाह को समाप्त करने के लिए डीडब्ल्यूसीडी द्वारा चलाए गये जागरूकता अभियानों से समुदाय शिक्षित हुआ है।

केंद्रीय, राज्य और जिला स्तर पर सहभागी विभागों के बीच कल्याणकारी योजनाओं का समन्वय

जिला थिरुवल्लूर, तमिलनाडु

उद्देश्य

जिले में बाल लिंग अनुपात और जन्म के समय लिंग अनुपात को बढ़ाना।

गतिविधि का विवरण

थिरुवल्लूर जिले ने सहभागी विभागों के साथ मिल कर बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ को लागू किया है ताकि केंद्रीय और राज्य स्तर की कल्याणकारी योजनाओं के प्रभाव को बढ़ाया जा सके, जिन्हे जिला स्तर पर कार्यन्वित किया जाता है। जो दो केंद्रीय स्तर की योजनाएँ लक्षित की गयी हैं, वे हैं सुकन्या समृद्धि योजना और पोषण अभियान। जो पाँच राज्य स्तर की योजनाएँ सम्मिलित की गयी हैं, वे हैं (क) गर्भवती और नवजात दल का अनुश्रवन और मूल्यांकन (पीआइसीएमई), (ख) डॉक्टर मुथुलक्ष्मी रेड्डी मातृत्व लाभ योजना, (ग) समूथाय वलाईगप्पू (सामुदायिक गोद भराई), (घ) सिवगामी अम्माईयार मेमोरीयल कन्या संरक्षण योजना, और (च) पुराची थलाईवर एमजीआर (पौष्टिक आहार कार्यक्रम)। एक जिला कार्य योजना (डीएपी) को जिला कार्य बल द्वारा विचार–विमर्श के बाद, जो योजना के प्रारम्भ होने के समय से ही हर दो हफ्ते में बैठक की जाती है, विभागों में धन का वितरण करने के लिए पहले से तय किया जाता है। डीएपी में (कं) अंतर्विभागीय चर्चा/बैठकें, (ख) प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण/जागरुकता कार्यक्रम, (ग) नवीनता, जागरुकता बढ़ाना, पहुँच बनाने वाली क्रिया और जानकारी, शिक्षा और संवाद (आइईसी) सामग्री बनाना और (घ) अनुश्रवन, मूल्यांकन और प्रलेखन शामिल हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभागों की गतिविधियाँ महिला एवं बाल विकास विभाग के साथ विचार–विमर्श करके विस्तृत की जाती हैं।

खासतौर से, 'बीबीबीपी' के उद्देश्य सहभागी विभागों की मौजूदा योजनाओं के साथ सम्मिलित किए जाते हैं। इससे सुनिश्चित होता है कि 'बीबीबीपी' के लिए किया गया कार्य अतिरिक्त बोझ की तरह ना देखा जाए क्योंकि लागू की गयी गतिविधियाँ आमतौर पर की जाने वाली गतिविधियों का हिस्सा हैं।

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

इसे पूरे जिले में बढ़ा दिया गया है।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

सहभागी विभागों, जो मुख्य साझेदारों के तौर पर शामिल हैं, में अधिकारियों का तालमेल, प्रतिबद्धता और प्रोत्साहन इस गतिविधि की सफलता के पीछे मुख्य कारक हैं।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

थिरुवल्लूर जिला भारत की तरह सांस्कृतिक रूप से विविध है। समन्वय लाने में मुख्य चुनौती है दृढ़ रूढ़ीवादी पारम्परिक सोच जो लड़कियों के प्रति उनके जन्म से लेकर मृत्यु तक लोगों के बीच व्यापित है। साथ ही अधिकतर लोगों को वह दुर्व्यवहार सताता है जो लड़कियों को अपने जीवनकाल में सहना पड़ता है। इसलिए उन्हें लगता है कि लड़कों के जैसे लड़कियों के अधिकारों की रक्षा करना बहुत कठिन है।

जागरुकता बढ़ाने के साधन

आइईसी सामग्री और फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं द्वारा जागरुकता बढ़ाना।

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

केंद्रीय और राज्य स्तरीय योजनाओं और सहभागी विभागों के साथ असरदार समन्वय के फलस्वरूप, थिरुवल्लूर जिले ने जन्म के समय लिंग अनुपात को 2018 में 925 से 2019 में 963 तक पहुँचा दिया है।

गुणात्मक परिणाम/मान

प्रभावपूर्ण जागरुकता कार्यक्रमों, पहुँच बनाने वाली गतिविधियों और संवेदीकरण कार्यक्रमों के कारण लोगों का बेटियों को स्वीकारने के प्रति व्यवहार सकारात्मक बन रहा है और लड़कों को प्राथमिकता देने वाली धारणा में कमी आ रही है। इसका परिणाम मात्रात्मक तौर से भी देखा जा सकता है।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

थिरुवल्लूर जिले में 'बीबीबीपी' का सहभागी विभागों के साथ समन्वय बना हुआ है और इसे लम्बे समय तक निम्नलिखित तरीकों से स्थिर रखा जा सकता है। पहला, निश्चित भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के साथ एक विस्तृत डीएपी बनाया जाता है जिसमें मुख्य भागीदारों को स्पष्ट रूप से धन आवंटित किया जाता है। 'बीबीबीपी' के उद्देश्यों को सहभागी विभागों की मौजूदा योजनाओं के साथ मिलाने से 'बीबीबीपी' के लिए किया गया काम अतिरिक्त बोझ की तरह नहीं देखा जाता है। जिला कलेक्टर और मुख्य भागीदारों की अनुमति के बाद डीएपी को कार्यान्वित किया जाता है। दूसरा, प्रधान प्रशिक्षकों जैसे कि अतिरिक्त अधिकारियों, ग्रामीण कल्याण अधिकारियों, बाल विकास सुरक्षा अधिकारियों, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, स्वयं सहायता समूहों, स्कूली शिक्षकों, गैर सरकारी संस्थानों (एनजीओ) के लिए 'बीबीबीपी' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। आखिर में, जिला कार्य बल की बैठकों के दौरान, प्रमुख भागीदारों की गतिविधियों की समीक्षा की जाती है और हर विभाग, एनजीओ, स्थानीय विजेताओं, इत्यादि में से उत्तम निर्वाहकों को अधिक प्रोत्साहित करने के लिए पुरस्कृत किया जाता है।

बालिका मंच-कन्या सशक्तिकरण सभा

जिला वारंगल, तेलंगाना

उद्देश्य

स्कूलों में किशोरियों के लिए कन्या सशक्तिकरण सभाओं (जीसीईसी) को स्थापित करना।

गतिविधि का विवरण

जीसीईसी को स्थापित करने के पीछे मुख्य उद्देश्य है (क) वेदनीय मुद्दों/दुर्व्यवहार/जोखिम भरे व्यवहार/धमकियों/छेड़खानी, आदि की पहचान/सूचना देने के लिए एक प्रणाली तैयार करना, (ख) स्कूलों और स्थानीय पुलिस के बीच सम्पर्क को मजबूत करके 'अपराध रोकने' और शीघ्र कार्यवाही पर ज़ोर देते हुए एक शिकायत निवारण व्यवस्था स्थापित करना, (ग) किशोरावस्था के शैक्षिक मामलों जैसे कि उम्र बढ़ना, स्वास्थ्य और स्वच्छता, लिंग सम्बंधी मुद्दे, आदि पर जागरूकता फैलाना, और (घ) लड़कियों को स्वयं अपनी बात रखने, अपने अधिकारों को जानने, शर्म और भय से लड़ने, अपना आत्मसम्मान और आत्मविश्वास बनाने और अपने, अपने रिश्तों और (एक हद तक) उनके आस-पास के समुदाय की जिम्मेदारी उठाने का सामर्थ्य बनाने में मदद करना।

प्रधानाध्यापकों/विशेष अधिकारियों/प्रधानाचार्यों और हर चयनित स्कूल से एक कन्या हितैषी अध्यापक के लिए जिला स्तर पर एक-दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इसे सितम्बर 2019 में किया गया था और इसका संचालन जिला कल्याण अधिकारी ने किया था। यह तय किया गया था कि जीसीईसी की पहली बैठक सितम्बर माह में की जाएगी। इसके पश्चात मासिक जीसीईसी बैठकों को हर सम्बंधी स्कूल/कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (केजीबीवी)/तेलंगाना राज्य मॉडल स्कूल (टीएसएमएस) में अक्टूबर से लेकर मार्च 2020 तक हर तीसरे शुक्रवार को किया जाएगा।

हर जीसीईसी का अध्यक्ष स्कूल का प्रधानाध्यापक होता है और कन्या हितैषी अध्यापक इसका सदस्य संयोजक (member convenor) होता है। सदस्यों में 10-12 लड़कियाँ (हर कक्षा से दो सक्रिय लड़कियाँ) शामिल हैं और बाहरी सदस्यों में स्थानीय पुलिस चौकी/एसएचई दल प्रभारी से एक महिला कांस्टेबल, और गाँव स्तरीय बाल सुरक्षा समिति से एक सदस्य के अलावा अन्य लोग शामिल हैं। बैठकों का सारांश और कार्यवाई का विवरण स्कूल स्तर पर दर्ज किया जाता है। गोपनीयता सुनिश्चित की जाती है।

इन सभाओं का मुख्य उद्देश्य है लड़कियों को सामुदायिक दबावों, जिनसे बाल विवाह और किशोरावस्था में गर्भवती होने में बढ़ोतरी होती है, पर ध्यान देने के लिए एक सुरक्षित स्थान देना। प्रलेखन और बैठकों के सारांश से लड़कियों को सशक्त करने वाले कार्यक्रमों को रूप-रेखा देने में, आवश्यकता आधारित दृष्टिकोण के जरिए, मदद मिल रही है। सभाओं की वजह से लिंग के अनुकूल व्यवहारों और आदतों में बढ़ोतरी हुई है और अधिकतर चर्चाएँ उन मुद्दों पर होती हैं जिन्हें स्कूल के सदस्यों द्वारा उठाया और सुलझाया गया है।।

> **इन सभाओं का मुख्य उद्देश्य है लड़कियों को सामुदायिक दबावों, जिनसे बाल विवाह और किशोरावस्था में गर्भवती होने में बढ़ोतरी होती है, पर ध्यान देने के लिए एक सुरक्षित स्थान देना।**

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

अब तक सरकारी संस्थानों में 76 जीसीईसी बनाए गये हैं।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

लड़कियों की हिस्सेदारी और मुश्किलों को पहचानने के लिए मैत्री पूर्ण सोच का अभिग्रहण, और कक्षा जैसे माहौल में पीयर (peer)–आधारित सीख मुख्य कारक रहे हैं जिन्होंने इस गतिविधि को सफल बनाया है। इन समूहों में पुलिस की सहभागिता वर्दी वाले अधिकारियों द्वारा दिए गये प्रत्यक्ष सहयोग को दर्शाता है। अतिरिक्त कौशल विकास के अवसर जैसे कि लड़कियों के लिए नेतृत्व प्रशिक्षण ने भी इस कार्यक्रम की सफलता में योगदान दिया है।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

बैठकों को नियमित रूप से सुनिश्चित करना चुनौतिपूर्ण है। इस पहल के महत्व को समझाने के लिए कन्या हितैषी अध्यापकों और लड़कियों के लिए अतिरिक्त प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

जागरुकता बढ़ाने के साधन

जागरूकता बढ़ाने का सामान जैसे कि पैम्फलेट और पोस्टर बाल विवाह की समाप्ति/कम उम्र में शादी, सुरक्षित और असुरक्षित स्पर्श, छेड़खानी, लिंग–आधारित भेदभाव, तस्करी, इत्यादि को दर्शाते हैं और लड़कियों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

76 स्कूलों (केजीबीवी/टीएसएमएस/माध्यमिक स्कूल) ने जीसीईसी सभाएँ स्थापित की हैं। तीन अलग–अलग स्कूलों में एक छेड़खानी का मुद्दा और स्कूल जाते समय बाहरी लोगों द्वारा दो दुर्व्यवहार के मामले सुलझाये जा चुके हैं।

गुणात्मक परिणाम/मान

जीसीईसी हमउम्र साथियों के लिए सहायक व्यवस्था साबित हुआ है। लड़के और लड़कियों के लिए कार्यरत शौचालय, स्कूल ना जाने वाले छात्रों की पहचान करना, पढ़ाई में अंतराल को भरने के लिए विशेष क्लास, इत्यादि वो विषय हैं जिन पर बैठकों में सबसे ज्यादा चर्चा की जाती है। योग्यताएँ जैसे कि आवेग नियंत्रण, संवाद, मुश्किलों का हल निकालना जिससे हमारी भावनाओं को पहचानने और दूसरों के साथ सकारात्मक रिश्ते बनाने के लिए अपने को व्यक्त करने की क्षमता बढ़ती है, और जिम्मेदारी वाले निर्णय लेने के लिए चुनौतिपूर्ण परिस्थितियों से निपटना भी जीसीईसी द्वारा जाँचे जा चुके हैं।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

इस पहल को कम से कम 400 निजी माध्यमिक स्कूलों में बढ़ाने की योजना बनाई जा रही है। इन स्कूलों में अनुकूलन और प्रशिक्षण कार्यक्रम साल 2020 की शुरुआत में किए जाएंगे। निजी स्कूलों में इस पहल की नकल करने से कन्या सुरक्षा जाल और प्रणाली को बनाने में अधिक सहायता मिलेगी। महिला और बाल विकास, पुलिस और अन्य विभागों के अतिरिक्त अधिकारियों की भागीदारी लड़कियों के लिए मददगार और प्रेरित करने वाली होगी।

माँ-दिकरी सम्मेलन

ज़िला सुरेंद्र नगर, गुजरात

उद्देश्य

लिंग संवेदनशीलता, लड़कियों के लिए शिक्षा और समाज में लड़कियों के महत्व में वृद्धि करना।

गतिविधि का विवरण

माँ–दिकरी सम्मेलन के उद्देश्य हैं (क) जमीनी स्तर पर हितधारकों तक पहुँच; (ख) लिंग समानता और बुनियादी शिक्षा के प्रति समुदाय को संवेदनशील बनाना; (ग) लिंग चयन और कई जन्मों के प्रति बनी अवधारणाओं को हटाना; (घ) स्वास्थ्य, स्वच्छता, पोषण पर जागरुकता बढ़ाना (च) जादू टोना और अंधविश्वास जैसी कुरीतियों को कम करना, और (छ) शादी से पूर्व परामर्श देना।

सुरेंद्र नगर जिले में 10 तालुका हैं। 'बीबीबीपी' की एक तालुक़ा में स्थित चुनिंदा गाँवों में लिंग अनुपात, स्कूल छोड़ चुके बच्चों की दर और गिरती जन्म दर के आधार पर दी गयी श्रेणी के मुताबिक़ साप्ताहिक सम्मेलन करने की रणनीति को पूरा किया जाता है। ग्राम पंचायत के सदस्य, तालुक़ा स्तर के अधिकारी और स्वास्थ्य कमेटी के सदस्य सम्मेलनों में शामिल होते हैं। कार्यक्रम का ढाँचा हर तालुक़ा में अलग होता है। इसमें परामर्श, केंद्रित समूह चर्चा (एफजीडी), संवादात्मक सत्र, विशेषज्ञों द्वारा वार्ता, दृश्य–श्रव्य (आडियो–विडियो) सत्र, नाटक, किशोरी मेला और स्वास्थ्य/कानूनी शिविर शामिल हैं। इस गतिविधि को लागू करने से पहले, एक कार्य योजना बनाई जाती है। लिंग अनुपात, मातृ मृत्यु दर, शिशु मृत्यु दर, नामांकन, ड्रापआउट दर, पोषण की स्थिति, आदि का ब्योरा इकट्ठा किया जाता है। किसी भी चिंतन की संख्या/मुद्दे के आधार पर गतिविधियों की प्राथमिकता तय की जाती है। कार्यान्वित करने की रणनीति को जरूरतों की प्राथमिकता के आधार पर तैयार किया जाता है।

इस गतिविधि को ब्लॉक स्तर पर विविध लक्षित महिला कल्याण केंद्रों द्वारा आशा और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की मदद से लागू किया जाता है। सम्मेलनों के अनेक उदाहरण इस प्रकार हैं: नव विवाहित महिलाओं को गर्भधारण और बच्चों के बीच अंतर पर परामर्श दिया जाता है। कभी–कभी माता पिता, लड़कियाँ, स्थानीय अध्यापक और शिक्षा अधिकारी एफजीडी के जरिए अनौपचारिक संवेदीकरण सत्रों के लिए एकत्रित हो जाते हैं। विशेषज्ञों और सरकारी अधिकारियों के साथ अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्नों के सत्रों से समुदाय को योजनाओं और नीतियों के बारे में जानकारी प्राप्त होने में मदद मिलती है। जागरूकता बढ़ाने के लिए लघु वृत्तचित्रों, सामाजिक/नारीवादी फ़िल्मों, नाटकों और लोक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। स्थानीय भाषाओं में किए गये छोटे नाटक (स्किट) लड़कियों की शिक्षा और लिंग समानता पर जोर देते हैं। प्रयोगात्मक निरूपण और कानूनी जागरूकता के लिए पावर पॉईंट प्रेजेंटेशन का प्रयोग किया जाता है। लड़कियों को शादी की सही उम्र, शारीरिक प्रौढ़ता, जन्म क्रम, बच्चे पैदा करने और पालने के कार्य के लिए आयु वर्ग, बच्चों में अंतर, नवजात और युवा बच्चों का आहार, आदि पर लड़कियों को परामर्श दिया जाता है। यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण करने सम्बंधी अधिनियम के तहत प्रावधानों और यौन शोषण सम्बंधी दंडों के बारे में उन्हें अवगत कराया जाता है।

अभिभावक–बच्चे के बीच रिश्तों में से माँ–बेटी का रिश्ता सबसे मजबूत बंधनों में से एक है। माताएं अपनी बेटियों से जुड़ सकती हैं और उनके लिए प्रेरणास्रोत होती हैं। वे उनके लिए संरक्षक की तरह होती हैं और उनका अपनी बेटियों पर असाधारण प्रभाव होता है। सामाजिक बदलाव लाने के लिए उन्हें एक साथ सम्बोधित करना कारगर साधन है।

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

इस पहल को पायलट के तौर पर लखतर ब्लॉक में कार्यान्वित किया गया था और अब इसे जिले के सभी 10 ब्लॉकों तक बढ़ा दिया गया है।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

इस पहल की सफलता के पीछे मुख्य कारक हैं इसका प्रभावी कार्यान्वयन, सम्पर्क बनाना और भागीदारों से फॉलो अप करना। अनेक सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूकता लाने से परिवारों को बच्चे पालने से सम्बंधित जिम्मेदारियों को सही तरीके से उठाने की समझ मिली है। एक महत्वपूर्ण पहलू है कानूनों और अधिकारों के बारे में बढ़ती जागरूकता, जिसके फलस्वरूप लोगों का विश्वास प्राप्त हुआ है और लोगों की मानसिकता बदलने की अधिक संभावना बनी है।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

समुदाय के भीतर रहन–सहन और परंपरागत आदर्शो को बदलना चुनौतीपूर्ण है। सम्पर्क–निर्माण एक समयबद्ध प्रक्रिया है और मेल–जोल बढ़ाने के लिए प्रयास की आवश्यकता होती है। पर्याप्त संख्या में परिवारों को एक समय पर समान मंच पर एकत्रित होने के लिए समझाना मुश्किल होता है, जब हर एक परिवार अलग–अलग तरह के व्यवसायों में लगा हुआ हो। दृष्टिकोण में बदलाव लाना जटिल होता है जब भागीदार खुले विचारों के ना हों और कम पढ़े–लिखे और/या अनपढ़ हों। जाति और साथ ही लिंग समानता के प्रति पारम्परिक सोच आज भी अवरोध पैदा करते हैं।

जागरुकता बढ़ाने के साधन

लीफलेट, पैम्फलेट, पोस्टर, लघु वृत्तचित्रों, अभियान सम्बंधी सामान जैसे कि टोपियाँ, टी–शर्ट, कलम, छल्ले और बच्चों के लिए किट।

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

अब तक कुल 84 सम्मेलन किए जा चुके हैं और कुल लाभार्थियों की संख्या 3777 है।

गुणात्मक परिणाम/मान

सम्मेलनों से व्यवहार में बदलाव आया है। ग्रामीण इलाकों में बाल विवाह की घटनाएँ कम हुई हैं। कम उम्र में शादी को लेकर परिवार अब विचार करने लगे हैं। संस्थागत प्रसवों में वृद्धि हुई है। लड़कियों के बीच सैनिटेरी नैपकीन का प्रयोग बढ़ने लगा है।

गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताएं स्वास्थ्य को लेकर अधिक सचेत हैं और परिवार, आमतौर पर, अपने बच्चों के स्वास्थ्य को लेकर ज्यादा सचेत हैं, अनीमिया से पीड़ित बच्चों का परिवारों द्वारा खास ध्यान रखा जा रहा है।

इस कार्यक्रम ने बेटियों के माता–पिता को उनका स्कूल में दाख़िला करने और समुदाय में प्रचलित प्रतिगामी आदर्शो के ख़िलाफ खड़े होने के लिए मजबूर कर दिया है। ये सम्मेलन प्रतिभागियों को समाज में लड़कियों की अहमियत के बारे में संवेदनशील बनाता है। इससे समुदाय में कम उम्र में शादी की प्रथा और गर्भधारण से छुटकारा पाने में मदद मिली है। माहवारी सम्बंधी जागरूकता, स्वास्थ्य और स्वच्छता पर बातचीत में धीरे–धीरे बढ़ोतरी हुई है। प्लास्टिक का इस्तेमाल घटाने के लिए प्रतिभागियों को ऊनी बैग भी दिए गये हैं।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

सम्मेलनों की भूमिका को बढ़ाने और निम्नलिखित विषयों को शामिल करने की सम्भावना है – स्कूल छोड़ चुकी लड़कियों का पुनः दाख़िला, माहवारी सम्बंधी स्वच्छता पर संवेदीकरण करना और हर स्कूल में लड़कियों के लिए अलग शौचालय को बढ़ावा देने और सुनिश्चित करने के लिए अधिक ध्यान देना।

अपनो बेटी अपनो मान

जिला पाली, राजस्थान

उद्देश्य

स्कूल जाने वाली लड़कियों के लिए अंग्रेजी, हिंदी और गणित विषय के बुनियादी अभ्यास कौशल को मजबूत बनाने के लिए अतिरिक्त पढ़ाई का प्रावधान करना।

गतिविधि का विवरण

जिला प्रशासन की पहल से एक 'अपनो बेटी अपनो मान' नामक पायलट परियोजना स्कूल जाने वाली लड़कियों के लिए अंग्रेजी, हिंदी और गणित के बुनियादी कौशल को मजबूत बनाने के लिए कार्यान्वित की गयी थी। लड़कियों को एक अच्छी शिक्षा प्रणाली के माध्यम से समर्थ बनाने के उद्देश्य से, इस योजना ने शुरुआत में सोजत ब्लॉक की 40 ग्राम पंचायतों की पाँचवी से आठवीं कक्षा में पढ़ने वाली 2600 लड़कियों को लक्षित किया था। शिक्षा विभाग की सहायता से, हिंदी, अंग्रेजी और गणित के लिए एक अलग पाठ्यक्रम तैयार किया गया जिसे विशेषज्ञों द्वारा स्कूल के पहले और बाद में पढ़ाया जाता था।

इस पहल को कार्यान्वित करने के लिए ये कदम शामिल थेः (कं) हिंदी, अंग्रेजी और गणित विषय में अभ्यास की जरूरतों को पहचानने के लिए एक प्रश्नावली का गठन, (ख) उचित शिक्षकों को नियुक्त करना, (ग) अभ्यास सम्बंधी साधनों जैसे कि एलईडी और स्मार्ट बोर्ड को उपलब्ध कराना, (घ) वर्कशॉप के माध्यम से शिक्षकों को अनुकूलित करना, और (च) प्रतिदिन की प्रगति की जांच करना।

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

इस परियोजना को पायलट के आधार पर चार महीनों (नवम्बर 2019–फरवरी 2020) के लिए संचालित किया गया था।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

जिला प्रशासन और ब्लॉक प्रबंधन का सक्रिय योगदान, तालमेल और सहयोग इस कार्यक्रम की सफलता के पीछे मुख्य कारक हैं।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

चुनौतियों में लक्षित समूह (कक्षा 5 से 8) की जरूरतों को पहचानना, उपयुक्त अभ्यास सामग्री को तैयार करना, वित्तीय संसाधनों का प्रबंधन करना, पढ़ाने के लिए संवादात्मक तरीकों का इस्तेमाल करना और जाँच साधनों को तैयार करना शामिल हैं।

जागरुकता बढ़ाने के साधन

जागरूकता मुख्यतः छात्रों और शिक्षकों के साथ कक्षा में संवाद के माध्यम से फैलाई जाती है।

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

अब तक 40 ग्राम पंचायतों से 2600 लड़कियों को इस क्रिया से फायदा पहुँचा है।

गुणात्मक परिणाम/मान

इस गतिविधि ने शिक्षा के प्रति लड़कियों के नजरिए को बदला है। इससे उनका अंकगणित, पढ़ने और लिखने (3 Rs.) का मौलिक कौशल मजबूत हुआ है। गणित के भय को खत्म करके और उसमें रुचि बढ़ा कर, छात्रों का ध्यान सक्रिय अभ्यास की ओर खिंचा है।

शिक्षण का केंद्र–बिंदु छात्रों में रुचि पैदा करना है, खासकर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

जिला प्रशासन इस पहल को नौ अन्य ब्लॉक में कार्यान्वित करने की तैयारी में हैं।

> ‘जिला प्रशासन और ब्लॉक प्रबंधन का सक्रिय योगदान, तालमेल और सहयोग इस कार्यक्रम की सफलता के पीछे मुख्य कारक हैं।’

आंगनवाड़ी केंद्रों में हर महीने की 24 तारीख़ को बालिका दिवस का अवलोकन

जिला कामरूप मेट्रोपॉलिटन, असम

उद्देश्य

लड़कियों के महत्व में वृद्धि करने हेतु हर महीने का एक दिन बालिका दिवस के लिए समर्पित करना।

गतिविधि का विवरण

बालिका दिवस, जिसे हर महीने की 24 तारीख़ को असम के कामरूप मेट्रोपॉलिटन जिले के सभी आंगनवाड़ी केंद्रों में मनाया जाता है, लड़कियों के महत्व और महत्व, पोषण, शिक्षा और सामुदायिक जीवन में भागीदारी लेने को बढ़ावा देता है। समुदाय को संघटित करने और उन्हें बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ (बीबीबीपी) के उद्देश्यों से अवगत कराने के लिए, विशेष कार्यक्रमों जैसे कि वृक्षारोपण, नवजात बच्चियों की माताओं का सत्कार, गर्भवती महिलाओं की गोद भराइ (पंचामृत), अन्नप्राशन, 10 वर्ष से कम आयु वाली बेटियों की माताओं को सुकन्या समृद्धि खाता खोलने के लिए फॉर्म का वितरण, इत्यादि का इस दिन आयोजन किया जाता है। ख़ासतौर पर, हर महीने इस दिन को 'बीबीबीपी' पर घर–घर जाकर अभियान और जीवित जन्म (live birth), 'बीबीबीपी', इत्यादि पर माता–पिता, पंचायती राज संस्थानों, नगर समिति सदस्यों के साथ सामुदायिक बैठकें की जाती हैं। मोईना मैना बोर्ड (गुड्डी–गुड्डा बोर्ड) को आंगनवाड़ी केंद्रों में असमी भाषा में लगाया जाता है जो कि जनता को बाल लिंग अनुपात और जन्म के समय लिंग अनुपात पर जानकारी देने का कार्य करता है। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता सुनिश्चित करती हैं कि लड़कियों के जीवित जन्मों में उतार–चढ़ाव, यदि कोई कमी हो, पर बातचीत की जाए।

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

यह गतिविधि 30 मई 2015 को आयोजित एक जिला कार्यबल की बैठक के दौरान लिए गए निर्णय के बाद पूरे जिले में लागू की गई थी।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

'बीबीबीपी' के अंतर्गत समुदायों को लड़कियों के महत्व को पहचानने के लिए प्रेरित करने हेतु आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया गया है।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए अनावरण दौरे (एक्सपोज़र विज़िट) और अतिरिक्त प्रशिक्षण की आवश्यकता है। उनके ऊपर कार्य का अत्यधिक बोझ है जिसे अन्य योजनाओं के साथ पूरा करना होता है। क्योंकि ये कार्यक्रम एकीकृत बाल विकास सेवा के फील्ड कार्यकर्ताओं द्वारा कार्यान्वित किया गया है, इसलिए आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं/आंगनवाड़ी केंद्रों को विशेष राशि दे कर इस योजना को निकट भविष्य में जमीनी स्तर पर बेहतर कार्यान्वयन के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

जागरुकता बढ़ाने के साधन

'बीबीबीपी' संदेश वाले स्टिकर, ब्रोशर, घरों का दौरा, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा घर–घर जा कर संचार करना।

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

जिले के सभी 1017 आंगनवाड़ी केंद्रों ने इस गतिविधि को कार्यान्वित किया है।

गुणात्मक परिणाम/मान

हर महीने बालिका दिवस को मनाकर, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा समाज में 'बीबीबीपी', लड़कियों के जीवित रहने, सुरक्षा, शिक्षा और सहभागिता में होने वाले लिंग भेदभाव पर जागरुकता बढ़ाने की कोशिश की जा रही है।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

क्योंकि आंगनवाड़ी कार्यकर्ता जमीनी स्तर पर काम करती हैं, इसलिए लोगों की मानसिकता को बदलने की बहुत अधिक सम्भावना है। पंचायती राज संस्थाओं के सदस्यों, स्थानीय गैर–सरकारी संगठनों, इत्यादि की सेवाओं का उपयोग कर के जिले के दूर के इलाकों में रह रहे लोगों तक पहुँचने की गुंजाइश है।

"बालिका दिवस को हर महीने मना कर, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की कोशिश है 'बीबीबीपी', समाज में लड़कियों के जीवित रहने, सुरक्षा, शिक्षा और सहभागिता में लिंग भेदभाव पर जागरुकता बढ़ाना।"

घर की पहचान बेटी के नाम

जिला लखीसराय, बिहार

उद्देश्य

हर एक बच्ची के जन्म को बढ़ावा देना।

गतिविधि का विवरण

झपानी गाँव में रहने वाले लोगों की मानसिकता में बदलाव लाने के लिए, एक पायलट परियोजना शुरू की जा रही है और इसे आंगनवाड़ी कार्यकर्ता चलाएंगी। बच्ची के जन्म पर, जिला और ब्लॉक स्तर के अधिकारी हर एक परिवार को 'बधाई संदेश' के शुभकामना कार्ड बांटते हैं, जिसके बाद प्रत्येक घर के बाहर नवजात बच्ची के नाम की तख़्ती लटकाई जाती है। माता–पिता अपने घरों का नाम अपनी बेटी के जन्म पर रखते हैं। हर नाम की तख़्ती इस पहल की सफलता की गवाही और स्मरण कराने का काम करती है। ये बेटियों के प्रति समाज के बर्ताव को नया दृष्टिकोण भी देती है, और औरतों को सशक्त करने और उनको सम्मान देने का प्रतीक है।

झपानी में कुछ घर इस पायलट के अंदर आते हैं जिनमें से घरों के नाम हैं आरोही निवास, सृष्टि निवास, सुनाक्षी निवास, लाडली निवास, राधिका निवास, दिव्या निवास, राज निवास, सोनम निवास, गीता निवास, ब्यूटी निवास और सुहानी निवास।

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

12 घरों में पायलट।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

जिला मजिस्ट्रेट की गांव के भीतर लड़कियों के भविष्य को लेकर गंभीर चिंता एक महत्वपूर्ण कारण था, जिसकी वजह से जिला प्रशासन ने लड़कियों के महत्व को बढ़ावा देने के लिए उपयुक्त पहल अपनाने का संकल्प लिया। यह सुनिश्चित करने के लिए की परामर्श देने का उचित तरीका अपनाया जाए, इस गतिविधि की सफलता का कारक रहा क्योंकि अपनी बेटियों को पालने के लिए अभिनव तरीका अपनाने और प्रतिगामी मानसिकता वाले परिवारों को समझाने हेतु प्रत्येक परामर्श सत्र को सुनियोजित किया जाता है। समुदाय फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं जैसे कि जिला और ब्लॉक अधिकारी और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को आदर देते हैं जो उनके लिए कार्यरत हैं। यह एक अन्य महत्वपूर्ण कारण है। इसके अलावा, फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं का सरल तरीका समुदाय को पसंद आता है।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

जो परिवार पुराने पितृसत्तात्मक मूल्यों को समर्थन देते हैं, जैसे कि बेटे को तवज्जो देना, वे इस गतिविधि में भाग लेने के लिए आसानी से नहीं मानते और उनको ब्लॉक और जिला स्तरीय अधिकारियों द्वारा अतिरिक्त सलाह की आवश्यकता होती है।

जागरुकता बढ़ाने के साधन

सहकर्मी शिक्षकों के साथ सहकर्मी परामर्श, एक–एक करके परामर्श, नुक्कड़ नाटक और ब्लॉक एवं जिला स्तरीय अधिकारियों द्वारा जागरूकता फेलाना।

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

इस पायलट में कुल 12 घरों को लक्षित किया गया है और इस पहल को बढ़ाने के लिए 202 घरों का चयन किया गया है।

गुणात्मक परिणाम/मान

यह पहल परिवारों को प्रोत्साहित करके लड़कियों को सक्षम बनाने के लिए सुझावों को आकार देने और उनकी समाज के सदस्य के तौर पर क़ीमत समझाने के लिए नया संदेश देने में सहायता कर रही है। परिवारों को अपनी बेटियों के प्रति जिम्मेदार बनाने के लिए प्रशासन द्वारा ध्यान देने के कारण, यह पहल लड़कियों के लिए एक सकारात्मक वातावरण बनाने में सहायता कर रही है।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

गाँव स्तर पर आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा इस पहल को जिला स्तर तक बढ़ाया जाएगा। 12 घरों में इस पायलट के सफल कार्यान्वयन के बाद, इस पहल को अन्य गाँवों के 202 घरों में लागू किया जाएगा।

बाल विवाह निषेध रथ (कारवाँ)

जिला नायागढ़, ओडिशा

उद्देश्य

पूरे जिले में बाल विवाह को समाप्त करना।

गतिविधि का विवरण

नायागढ़ जिले में पाया गया है कि बाल विवाह आज भी एक चुनौती है। मानसिकता को बदलने के लिए, जिला प्रशासन ने बाल विवाह निषेध रथ के आयोजन का निर्णय लिया। इसे नायागढ़ जिले के गावों, ग्राम पंचायतों और ब्लॉक में जागरूकता बढ़ाने के लिए एक महीने तक चलाए जाने के लिए आयोजित किया गया था। विभिन्न स्थानीय सांस्कृतिक गतिविधियाँ, जैसे कि पल्ला, दसकठिया, घुदुकी, आदि भी जागरूकता बढ़ाने के लिए गाँव स्तर पर आयोजित की गयी थीं। बाल विवाह निषेध रथ को माननीय अध्यक्ष जिला परिषद, कलेक्टर और जिला मजिस्ट्रेट, पुलिस अधीक्षक और साथ ही जिला बाल सुरक्षा अधिकारी और पंचायती राज संस्थान के सदस्यों द्वारा किया गया था।

अभ्यास की स्थिति (पायलट/स्केल्ड अप)

पायलट।

अभ्यास की सफलता के पीछे कारक

जिले के उच्च स्तरीय अधिकारियों की भागीदारी, स्थानीय नेताओं की सहभागिता, जनता के बीच समन्वय, गैर सरकारी संस्थाओं और कार्यक्रम के दौरान लागू की गयी सामाजिक गतिविधियों ने इस क्रिया की सफलता में योगदान दिया है।

कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

जिले में बाल विवाह को लेकर आम धारणा बहुत पुरानी है और इसे बदलना चुनौतिपूर्ण है।

जागरुकता बढ़ाने के साधन

कारवां।

मात्रात्मक परिणाम/मूल्य

पूरे जिले में 15 लाख लोग।

गुणात्मक परिणाम/मान

इस कार्यक्रम की वजह से, लोगों को बाल विवाह के दुष्परिणामों के बारे में जानकारी मिली। चाइल्ड लाइन 1098 पर बाल विवाह रोकने के लिए लगभग 53 फोन कॉल किए गये। फलतः बाल विवाह निषेध अधिकारियों और जिला प्रशासन द्वारा कार्रवाई की गयी।

मौजूदा दस्तावेज/अन्य स्थानों में कार्यान्वयन/भविष्य की संभावनाएं/प्रभाव की संभावना

रथ को साल में एक बार एक महीने की अवधि के लिए चलाने की योजना बनाई जा रही है, जैसा कि पायलट में देखा गया था।

शिक्षित बेटी का मतलब
शिक्षित परिवार और शिक्षित राष्ट्र

बेटियों को सशक्त बनाएं। उन्हें समान अधिकार और अवसर दें।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ